



अधिकतम 32.7 डिग्री
सूतम 24.8 डिग्री

सोनीपत भूमि

रोहतक, रविवार, 27 जुलाई, 2025

- 11 मिड-डे-मिल वर्कर्स ने मानदेय बढ़ाने व पक्का करने की मांग, प्रदर्शन
- 12 दो गलियों में बिछेगी नई सीवर लाइन



Hindu Group of Institutions
Under the aegis of
The Sonepat Hindu Educational and Charitable Society
DELHI-NCR, SONEPAT

110+ YEARS OF ACADEMIC EXCELLENCE Admission Open 2025-26

Hindu College of Engineering
DIPLOMA | BCA | B.TECH | M.TECH
9034090663, 9254968115

Hindu Institute of Management
BBA | BCA | MBA | MCA
8901440704, 9254968119

Hindu College of Design, Architecture & Planning
B.ARCH. | B.I.D. | M.PLAN.
9254968116, 9254968117

Hindu College of Pharmacy
D.Pharm | B.Pharm | M.Pharm
9254968120, 9254968121

Hindu Girls College
BSIT/BVOC (IT) | B.Sc. | B.Com. | B.A. | B.C.A. | B.B.A. | M.Sc. | M.A. | M.Com. | B.Sc Maths (Hons) | B.Sc. (Bio-Tech)
9254968124, 9254968125

Hindu College (Co-Ed.)
BCA | BBA | B.Sc | B.Com | B.A. | M.Sc | M.Com | M.A.
9254968126, 9254968127

Hindu College of Education
D.El.Ed. | B.Ed. | M.Ed.
9254968122, 9254968123

UPCOMING: HINDU COLLEGE OF NURSING & RESEARCH

सीईटी : 58 परीक्षा केंद्रों पर 91 प्रतिशत रही उपस्थिति दो केंद्रों पर 30 मिनट देरी से परीक्षा दो सत्रों में 26635 ने दिया एग्जाम

एक परीक्षा केंद्र पर देर से पहुंची थी स्टेशनरी, व्यवस्था के लिए झोंकी पूरी ताकत, फिर भी सामने आई बड़बड़तामी
हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

जिले के 58 परीक्षा केंद्रों पर शनिवार को दो शिफ्टों में संयुक्त पात्रता परीक्षा (सीईटी) हुई। परीक्षार्थियों की उपस्थिति की बात करें तो दोनों सत्रों में कुल मिलाकर 91 प्रतिशत उपस्थिति रही। सभी परीक्षा केंद्रों पर कड़ी सुरक्षा के बीच हुई। परीक्षा के दौरान किसी भी तरह की नकल ना हो इसके लिए अभ्यर्थियों को तीन स्तरीय चेकिंग से गुजरना पड़ा। महिला अभ्यर्थियों के गहने तक उतरवा लिए गए थे। मोबाइल, घड़ी, ज्वेलरी और अन्य किसी भी इलेक्ट्रॉनिक सामग्री की सख्त मनाही थी। लेकिन केंद्रों पर बैग और सामान रखने की समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण कई



सोनीपत। सीईटी परीक्षा के दौरान डीएवी स्कूल सेक्टर 15 के बाहर अभ्यर्थियों की भीड़। अभ्यर्थियों को पेड़ों की डाली पर बैग टांगने तक को मजबूर होना पड़ा। किसी भी परीक्षा केंद्र पर इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस और अन्य कोई सामग्री नहीं पकड़ी गई। सख्ती से चलते दोनों सत्र में 2537 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहे। स्टेशनरी समय से न पहुंच पाने की वजह से दो केंद्रों पर 30 मिनट देरी से परीक्षा शुरू हो सकी। सीईटी के लिये वाहनों के इंतजाम से लेकर अभ्यर्थियों को व्यवस्थित ढंग से परीक्षा केंद्र तक पहुंचाने के लिए सहायता केंद्र बनाए गए। निजी संस्थाओं का भी सहयोग लिया गया, लेकिन इसके बाद भी बड़बड़तामी के उदाहरण देखने को मिले। कुल 58 केंद्रों पर परीक्षा कराई गई। समय से स्टेशनरी पहुंचाने का आदेश दिया गया, लेकिन शहर के लिटिल एंजल्स स्कूल में बने परीक्षा केंद्र पर स्टेशनरी देर से पहुंचने व हिंदू कन्या स्कूल से कारण परीक्षा समय से शुरू नहीं हो सकी। काफी देर तक अभ्यर्थी संशय में रहे। हालांकि 30 मिनट विलंब से परीक्षा शुरू करा दी गई। वहीं पर भी बायोमेट्रिक में तकनीकी खराबी तो नहीं

2537 रहे अनुपस्थित
जिले में सीईटी के लिए 58 केंद्र बनाए गए हैं। शनिवार को पहले सत्र में 13321 तथा दूसरे सत्र में 13314 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। सीईटी के लिए पहले सत्र में 14586 अभ्यर्थियों में से 13321 अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी और 1265 अनुपस्थित रहे। पहले सत्र में 91.33 फीसदी अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी। वहीं दूसरे सत्र में 14586 अभ्यर्थियों में से 13314 ने परीक्षा दी और 1272 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहे। दूसरे सत्र में 91.28 फीसदी अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी।
सड़कों पर जाम के हालात
दोनों सत्रों में परीक्षा शुरू होने से पहले और छूटने के बाद अभ्यर्थियों का रेला सड़कों पर देखने को मिला, जिसकी वजह से मुख्य रोड, ए बहालगढ़ रोड, गोहाना रोड, ककरोई चौक के पास, काठ मंडी के पास भीषण जाम की स्थिति बन गई। पुलिस एवं ट्रैफिक कर्मियों को जाम खुलवाने के लिए काफी परिश्रम होना पड़ा।
आयी। कहीं कोई अराजकता न हो इसके लिए पुलिस आयुक्त ममता सिंह व डीसी सुशील सारवान भ्रमणशील रहे। प्रमुख अधिकारियों ने विभिन्न परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण किया।



परीक्षा देने के बाद परीक्षा केंद्र से बाहर आते अभ्यर्थी

सभी परीक्षार्थियों के लिए समान दूरी बनाना संभव नहीं: चेयरमैन

सोनीपत। एचएसएससी के अध्यक्ष हिममत सिंह ने शनिवार को सामान्य पात्रता परीक्षा (सीईटी) को लेकर नूंह, फरीदाबाद के बाद सोनीपत के परीक्षा केंद्रों का दौरा किया। उन्होंने कहा कि परीक्षा के बाद उच्च न्यायालय के निर्देशानुसार त्रुटियों के लिए पोर्टल खोला जाएगा। करीब 15 दिन में परिणाम जारी किया जा सकता है। आयोग में एक साल के अनुभव के आधार पर उन्हें महसूस हो रहा है कि परीक्षा को लेकर आयोग, प्रदेश की प्रशासन व्यवस्था एकजुटता से कार्य कर रहे हैं। बच्चे भी प्रशंसा कर रहे हैं। पेपर लीक न हो, इसे लेकर प्रशिक्षण संस्थानों पर खास नजर रखी गई है। एचएसएससी के सभी नियमों को आधार बनाकर काम किए जा रहे हैं। आगे भी प्रबंध व्यवस्थाओं में सुधार लाया जाएगा। परीक्षा केंद्रों की दूरी पर कहा कि अभ्यर्थियों के लिए 25 से 100 किलोमीटर की दूरी रखी गई है। सभी के लिए समान दूरी पर केंद्र बनाना संभव नहीं है। उन्होंने जिला परिषद के हॉल में बनाए गए स्टॉग रूम, सेक्टर-15 के डीएवी स्कूल, जीवीएम महाविद्यालय, जी-3 स्कूल पर डीसीआरएससी, मुख्यतः का दौरा किया। उनके साथ एचएसएससी के सचिव कपिल, पुलिस आयुक्त ममता सिंह, डीसी सुशील सारवान, डीसीपी नरेंद्र सिंह, एसडीएम सुभाष चंद्र मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि एचएसएससी ने सोनीपत, रोहतक, झज्जर जिलों से परीक्षा गड़बड़ी वाले पुराने टैग हटाने का काम किया है। आगे जब भी परीक्षा होगी तो प्रदेशभर में ही होगी।
अभ्यर्थियों से भी की बातचीत: हिममत सिंह ने मुख्यतः के तीन बंधु विश्वविद्यालय में बनाए गए केंद्र का दौरा किया। सड़क पर अभ्यर्थियों से बातचीत की। सभी व्यवस्थाओं को उचित बताया। वहीं एक परीक्षा केंद्र पर स्टेशनरी का सामान देरी से पहुंचने व परीक्षा देरी से प्रारंभ होने के खवाल पर कहा कि ऐसा मामला उनके संज्ञान में नहीं आया है।



अल सुबह बस स्टैंड पर पहुंचते अभ्यर्थी।



परीक्षार्थी को पानी पिलाने हुए समाजसेवी। आभूषण निकालती एक अभ्यर्थी।



केंद्र के बाहर अभ्यर्थियों के कागजात की जांच करते पुलिस कर्मी व लगी लाइन।

सोनीपत, रोहतक में केंद्र न बनाने के मिले थे सुझाव : उन्होंने बताया कि परीक्षा से पूर्व अधिकारियों के साथ केंद्र बनाने पर चर्चा की गई थी। कुछ लोगों ने कहा कि सोनीपत, रोहतक, झज्जर में परीक्षा केंद्र नहीं होना चाहिए, पिछली बार भी यहां केंद्र नहीं बनाए गए थे। इन जिलों में पेपर में गड़बड़ी होने की उपायदा संभावना रहती है। इस बात पर उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश ही नहीं, बल्कि चंडीगढ़ में भी सीईटी लिया जा रहा है। प्रदेश में कोई भी जिला संवेदनशील नहीं है।

सड़कों पर व्यवस्था फेल, कहीं जाम तो कहीं वापसी को बसें नहीं

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

संयुक्त पात्रता परीक्षा (सीईटी) को लेकर प्रशासन ने भले ही सुरक्षा और परिवहन व्यवस्थाओं में कोई कसर नहीं छोड़ी हो, लेकिन परीक्षा के दिन मैदान पर हालात कुछ और ही नजर आए। विशेषकर सोनीपत जिले में परीक्षार्थियों को कई मोर्चों पर अव्यवस्थाओं का सामना करना पड़ा—चाहे बात सड़कों पर लगे जाम की हो या परीक्षा केंद्रों तक पहुंचने और वापस लौटने की बसों की। शनिवार को पहली शिफ्ट में हुई परीक्षा के बाद मुख्यतः रोड पर लगा जाम सभी तैयारियों पर भारी पड़ा। वहीं परीक्षा खत्म होने के बाद परीक्षार्थी वापस गंतव्य तक जाने के लिए बसों का इंतजार कर रहे, लेकिन लंबे समय



तक बसें नहीं पहुंची और जाम में फंसी रही। परीक्षार्थियों को मजबूरन कड़ी धूप में पैदल ही मुख्यतः तक का सफर पैदल तय करना पड़ा। जिस पर परीक्षार्थियों ने अव्यवस्था को लेकर असंतोष जताया है।

एसी नहीं चलने से परेशान रहे
सोनीपत से परीक्षार्थियों को लेकर कुरुक्षेत्र जा रही एक निजी स्कूल की बस में एसी नहीं चलने पर परीक्षार्थी भड़क गए। बस में एसी न चलने पर परीक्षार्थी परेशान हो गए। खिड़कियां बंद होने के कारण हवा नहीं मिल रही थी, जिससे घटन महसूस हुई। परीक्षार्थियों ने रास्ते में ही बस रुकवाकर अधिकारियों से शिकायत की, जिसके बाद उन्हें दूसरी बस में भेजा गया।

गंभीरता इतनी थी कि शुरुवार-शनिवार की देर रात 2:30 बजे से ही अभ्यर्थी बस अड्डों पर जुटने लगे थे। जिले से परीक्षार्थी गुरुग्राम और कुरुक्षेत्र रवाना हुए। दूसरी तरफ जिले में पेपर देने पानीपत व भिवानी से परीक्षार्थी पहुंचे।

South Point GROUP OF INSTITUTIONS, SONIPAT
Run by Mange Ram Educational and Charitable Trust (Regd.)
98120 20033, 98124 21919, 90344 72910
Direct Admission

- B.Tech / LEET (CSE, ECE, Mechanical, Civil)
- M.Tech (CSE, ECE) • M.Tech Part Time (ECE / CSE)
- Diploma / LEET (CSE, ECE, Electrical, Mechanical, Civil, MLT)
- BBA, BCA, MBA, MCA
- B.A. LL.B (Hons.), L.L.B. (Hons.), LLM (Hons.)
- B.A., B.Sc. (Medical/ Non-Medical), B.Com, M.Com, PGD (Yoga)
- M.Sc. (Physics, Chemistry, Maths)
- M.A. (English, Hindi, History, Pol. Science)
- B.Ed., M.Ed., JBT / D.Ed., **B.P.Ed.**
- D.Pharm., B.Pharm., B. Pharm / Leet
- **B.Sc. (Nursing)**
- CBSE Affiliated, Sr. Sec. Schools

DILBAG S. KHATRI
Chairman
98120 20033

बस बदलने व देरी से चलने पर मड़के, निजी बस के परिचालक पर उतारने का आरोप सोनीपत। सोनीपत से गुरुग्राम जाने वाले कई परीक्षार्थी जब 5:30 बजे के बाद पहुंचे, तो रोडवेज द्वारा भेजी गई नई बस पहले 20 मिनट तक नहीं चली। फिर परीक्षार्थियों को दो अलग-अलग निजी स्कूल की बसों में बिठाया गया, लेकिन बार-बार सीट बदलवाने और देरी से रवाना होने पर परीक्षार्थी गुस्से में आ गए। आखिरकार 6:10 बजे एक रोडवेज बस भेजकर स्थिति संभाली गई।
...तो नहीं माने आदेश
सीईटी को लेकर सकार ने परीक्षार्थियों के लिए सफर निःशुल्क किया गया था, लेकिन एक निजी बस से परीक्षार्थी को बस से नीचे उतारने का मामला सामने आया है। जींद के गांव खरल निवासी राजीव ने बताया कि उनका सोनीपत के विकास शिक्षा सदन में पहली शिफ्ट में पेपर था। वह पेपर देने के बाद बस अड्डे से प्राइवेट बस में बैठकर जींद की तरफ जा रहा था। बस अड्डे से बाहर निकलते ही चालक ने चौक पर बस रोक दी और उसे यह कहते हुए उतार दिया कि हम सीईटी के परीक्षार्थियों को नहीं बैठा रहे। जिसके बाद वह बस अड्डे पर पहुंचा और अधिकारियों को इससे अवगत कराया। इसके बाद जींद जाने के लिए दूसरी बस का इंतजार करना पड़ा।
बस के लिए पहुंचे प्रशिक्षण केंद्र, वापस लौटना पड़ा मुख्य विश्वविद्यालय
सुबह के सत्र में पानीपत से पेपर देने सोनीपत पहुंचे परीक्षार्थियों को मुख्य विश्वविद्यालय चालक प्रशिक्षण केंद्र पर रुकवाया गया था, जहां पहले से तैयार खड़ी शटल बसों के सहारे परीक्षार्थियों को उनके परीक्षा केंद्र तक पहुंचाया गया। साथ ही कहा था कि परीक्षा खत्म होने के बाद यें बसें उन्हें वापस लेकर आएंगी। सुबह 10 बजे शुरू हुआ पेपर 11:45 बजे खत्म हुआ। देवदू रोड पर स्थित प्रशिक्षण संस्थानों में चार परीक्षा केंद्र बनाए गए थे। परीक्षार्थी पेपर खत्म होने के बाद केंद्र के बाहर शटल बसों का इंतजार करते रहे। करीब 20 मिनट तक बसें नहीं पहुंची, जिसके बाद कुछ परीक्षार्थियों ने पैदल ही मुख्यतः तक दौड़ लगाई तो कुछ ने आटो या ई-रिक्शा का सहारा लिया। परीक्षार्थी जैसे-तैसे मुख्य विश्वविद्यालय चालक प्रशिक्षण केंद्र पहुंचे, लेकिन वहां पता लगा कि पानीपत जाने के लिए बसें मुख्य विश्वविद्यालय छोड़कर निजी बसें प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से मिलेगी, ऐसे में परीक्षार्थियों को वापस दौड़ लगानी पड़ी।

आप सभी को
सुहाग व समृद्धि के पावन पर्व
हरियाली तीज
की हार्दिक शुभकामनाएं

परमवीर सैनी
प्रदेश सह संयोजक
पंचायती राज प्रकोष्ठ (हरियाणा)

श्री नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री
श्री नायब सिंह सोनी मुख्यमंत्री
श्री मोहन लाल वड़ौली प्रदेशाध्यक्ष
श्री अरविन्द शर्मा कैबिनेट मंत्री
विजेन्द्र मलिक गोहाना जिलाध्यक्ष
श्री रामफल चिड़ाना पूर्व विधायक

आप सभी को
सुहाग व समृद्धि के पावन पर्व
हरियाली तीज
की हार्दिक शुभकामनाएं

महेन्द्र चिड़ाना
भाजपा गोहाना जिला महामंत्री

पांच साल में पैसों को डबल, ट्रिपल करने वाले सात फंड, निवेशकों को बड़ा फायदा

- हाइब्रिड कैटेगरी की स्कीम्स ने इक्विटी को दी कड़ी टक्कर
- बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स ने 5 साल में दिया बढ़िया रिटर्न
- निवेशकों के पैसों को दो से तीन गुना तक कर दिया

निवेश मंत्रा बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड्स से हाई रिटर्न हासिल करने की बात ही तो आम तौर पर हमारा ध्यान इक्विटी स्कीमों की तरफ ही जाता है, लेकिन हाइब्रिड फंड्स की एक कैटेगरी ऐसी है, जो निवेशकों को उंचा रिटर्न देने के मामले में इक्विटी फंड्स को टक्कर दे सकती है। ये कैटेगरी है डायनेमिक एसेट एलोकेशन फंड्स यानी बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स की। इस कैटेगरी के टॉप 7 फंड्स ने 5 साल में निवेशकों के पैसों को डबल-ट्रिपल करके दिखाया है। साथ ही सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) पर भी इनका सालाना रिटर्न काफी आकर्षक रहा है। इन टॉप 7 बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स में एचडीएफसी म्यूचुअल फंड, निपॉन इंडिया, आईसीआईआई प्रू टाटा म्यूचुअल फंड, बड़ौदा बीएनपी परीबा और आदित्य बिरला सनलाइफ जैसे दिग्गज फंड हाउस की स्कीम शामिल हैं।

ऐसा रहा प्रदर्शन

टॉप 7 बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स का पिछले 5 साल का एनुअल रिटर्न करीब 15% से 24% तक रहा है। इन सभी फंड्स ने 5 साल पहले किए गए 1 लाख रुपये के निवेश को दो लाख रुपये से 2.10 लाख रुपये तक बढ़ा दिया है। इतना ही नहीं, इन सभी फंड्स ने SIP के जरिये किए गए निवेश पर भी साल दर

साल 13% से लेकर 21% तक का एनुअल रिटर्न दिया है। आइए डालते हैं इन सभी फंड्स के पिछले प्रदर्शन पर एक नजर।

1. एचडीएफसी बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
 - 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 24.62%
 - 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया: 3 लाख रुपये
 - 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने: 10.12 लाख रुपये (एनुअल रिटर्न: 21.02%)
2. बड़ौदा बीएनपी परीबा बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
 - 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 17.03%
 - 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया: 2.20 लाख रुपये
 - 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने: 8.89 लाख रुपये (एनुअल रिटर्न: 15.74%)
3. एडवांटेज बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
 - 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.92%
 - 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया: 2.09 लाख रुपये
 - 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने: 8.44 लाख रुपये (एनुअल रिटर्न: 13.6%)
4. आदित्य बिरला सनलाइफ बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
 - 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.71%
 - 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया: 2.08 लाख रुपये
 - 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने: 8.60 लाख रुपये (एनुअल रिटर्न: 14.4%)

5 साल में 15 से 24% तक एनुअल रिटर्न दिया



5. निपॉन इंडिया बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
 - 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.67%
 - 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया: 2.07 लाख रुपये
 - 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने: 8.52 लाख रुपये (एनुअल रिटर्न: 14.02%)
6. आईसीआईआईआई प्रू थियेट्रल बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
 - 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.52%
 - 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया: 2.06 लाख रुपये
 - 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने: 8.52 लाख रुपये (एनुअल रिटर्न: 13.99%)
7. टाटा बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
 - 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 14.99%
 - 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया: 2.01 लाख रुपये
 - 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने: 8.32 लाख रुपये (एनुअल रिटर्न: 13.03%)

बेंचमार्क और रिस्क लेवल

इन सभी हाइब्रिड फंड्स का बेंचमार्क इंडेक्स इन दो में से कोई एक है - निपटी 50 हाइब्रिड कंपोजिट डेट 50:50 इंडेक्स, जिसका पिछले 5 साल का सीएजीआर 12.70% रहा है या क्रिसिल हाइब्रिड 50+50 मॉडरेट इंडेक्स, जिसका 5 साल का सीएजीआर 13.62% है। सभी 7 फंड्स को रिस्कोमीटर पर बहुत अधिक जोखिम की रेटिंग दी गई है।

बैलेंस्ड एडवांटेज फंड की निवेश रणनीति

पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट के बीच फंड एलोकेशन को वक्त के हिसाब से बदलने की रणनीति बैलेंस्ड एडवांटेज फंड या डायनेमिक एसेट एलोकेशन फंड (Balanced Advantage Fund or Dynamic Asset Allocation) की सबसे बड़ी खूबी है। इस रणनीति की बहालत व म्यूचुअल फंड बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच भी बेहतर और स्टेबल रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं। सेबी के नियमों के तहत इन फंड्स के मैनेजर को इक्विटी और डेट के बीच अपना फंड एलोकेशन जारी से 100% तक बदलते रहने की छूट मिली हुई है। इस रणनीति का एक फायदा यह भी है कि अगर फंड मैनेजर इक्विटी में निवेश को 65% या उससे ऊपर रखता है, तो इसमें निवेश पर इक्विटी फंड्स की तरह टैक्स बेंचमार्क भी मिल सकता है। हालांकि इक्विटी में ज्यादा एक्सपोजर की संभावना के कारण बैलेंस्ड एडवांटेज फंड में रिस्क भी अधिक रहता है। इसलिए इनमें निवेश का फैसला करने से पहले अपनी रिस्क बर्दाश्त करने की क्षमता को परख लेना चाहिए और हमेशा लंबी अवधि के लिए ऐसे लगाने की तैयारी रखनी चाहिए। साथ ही यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि म्यूचुअल फंड का पिछला रिटर्न भविष्य में जारी रहने की गारंटी नहीं होती।

(डिस्क्लेमर: इस आर्टिकल का उद्देश्य सिर्फ जानकारी देना है, निवेश की सलाह देना नहीं, निवेश का कोई भी फैसला अपने इनवेस्टमेंट एडवाइसरों की सलाह लेते करे।)

जीवन में आगे बढ़ने के साथ-साथ, बढ़ाते जाएं अपना निवेश, जल्द बनेंगे करोड़पति

सुझाव बिजनेस डेस्क

अगर आप भी निवेश के जरिये अच्छा पैसा जुटाना चाहते हैं तो अपने जीवन में आगे बढ़ने के साथ साथ निवेश को भी बढ़ाते जाएं। इससे आपको जल्द करोड़पति बनने से कोई नहीं रोक पाएगा। आप अपने सपने आसानी से पूरे कर पाएंगे। इसके लिए जरूरी है, अपने लक्ष्य तय करें और लंबी अवधि के लिए निवेश का प्लान बनाएं। अपने जीवन में आगे बढ़ने के साथ साथ निवेश को भी बढ़ाते जाएं यानी निवेश के लिए स्टैप-अप एसआईपी के फार्मूले को अपनाएं। अपने अनावश्यक खर्चों पर लगाम लगाएं और अपनी इनकम का कम से कम दस फीसदी निवेश जरूर करें और इसे हर साल बढ़ाते जाएं। फिर देखना आपका पैसा दिन दूनी और रात चौगुनी के साथ बढ़ेगा। नए अवसर, बड़े सपने और बदलती जीवनशैली के साथ जीवन आगे बढ़ते रहने की कहानी है। जैसे-जैसे आपकी आय बढ़ती है, वैसे-वैसे आपकी ख्वाहिशें और खर्च भी बढ़ते हैं। क्या आपकी निवेश रणनीति भी इसी रफ्तार से आगे बढ़ रही है? जिस तरह आप अपने सपनों की नई बाइक खरीदते हैं, या बेहतर घर में शिफ्ट होते हैं, उसी तरह जरूरी है कि आप अपने एसआईपी (सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान) को भी अपग्रेड करें ताकि, वो आपके बदलते जीवन के साथ कदम से कदम मिला सके। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि स्टैप-अप एसआईपी (एसआईपी) राशि को बढ़ाना क्या है और कैसे यह आपको वित्तीय रूप से आगे बनाए रखने में मदद करता है।

- हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें, इससे बढ़िया रिटर्न मिलेगा
- अपनी रिस्क क्षमता को जांच लें, अनावश्यक खर्चों पर रोक लगाएं
- हर साल अपने सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान को भी अपग्रेड करें
- अपनी कमाई का कम से कम दस फीसदी हिस्सा बचत में लगाएं



स्टैप-अप एसआईपी क्या है

स्टैप-अप एसआईपी (जिसे टॉप-अप एसआईपी भी कहा जाता है) एक ऐसी सुविधा है जिसमें आप अपने एसआईपी निवेश को तय अंतराल पर (सालाना या अर्धवार्षिक) एक निश्चित राशि या प्रतिशत के हिसाब से बढ़ा सकते हैं। इसका मतलब है कि हर महीने एक ही राशि निवेश करने की बजाय, आप जैसे-जैसे कमाते हैं, वैसे-वैसे अपना निवेश भी बढ़ाते हैं। इसलिए स्टैप-अप एसआईपी जरूरी - बढ़ती आय और खर्चों के साथ तालमेल

जब आपकी सैलरी बढ़ती है या प्रमोशन होता है, तो आपकी जीवनशैली भी बेहतर होती है। शायद आप नई बाइक खरीदते हैं, बेहतर फ्लैट में शिफ्ट होते हैं, या खूब घूमते हैं। ऐसे में खर्च बढ़ता है और आर्थिक लक्ष्य भी बड़े हो जाते हैं। एसआईपी को स्टैप-अप करके आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आपकी बढ़ती आय और आकांक्षाओं के साथ आपके निवेश का तालमेल बना रहे।

महंगाई को मात

हर साल महंगाई की वजह से जीवन-यापन में होने वाला खर्च बढ़ता रहता है। अगर आपकी एसआईपी की राशि एक समान ही रहती है, तो भविष्य में वह आपकी जरूरतों, लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पाएगी। एसआईपी बढ़ाने से आपका निवेश तेजी से बढ़ता है और आप महंगाई के अस्तर से बेपरवाह रह सकते हैं।

बड़े लक्ष्य जल्दी हासिल करें

स्टैप-अप एसआईपी के जरिए आप अपने आर्थिक लक्ष्यों को जल्दी हासिल कर सकते हैं। इसकी मदद से आप बड़े सपनों जैसे लग्जरी कार, विदेश यात्रा या रिटायरमेंट के लिए बड़ी रकम को भी बिना किसी आर्थिक तनाव के हासिल कर सकते हैं।

स्टैप-अप एसआईपी कैसे काम करता है?

- ▶ मान लीजिए आप 5,000 रुपये प्रति माह की एसआईपी शुरू करते हैं, जिसमें हर साल 1,000 रुपये स्टैप-अप करते हैं।
- ▶ पहले साल में, आप 5,000 रुपये/माह निवेश करते हैं
- ▶ दूसरे साल में, यह 6,000 रुपये/माह हो जाता है
- ▶ तीसरे साल में, 7,000 रुपये/माह, और यह इसी तरह आगे बढ़ता है।
- ▶ इस तरह धीरे-धीरे बढ़ती एसआईपी आपकी बढ़ती सैलरी के साथ मेल खाती है। जैसे-जैसे आपका वेतन बढ़ता है, आपका निवेश भी बढ़ता है और आपकी जेब पर भी एकसाथ ज्यादा बोझ नहीं पड़ता।

असरदार तरीका

स्टैप-अप एसआईपी यह सुनिश्चित करने का एक आसान, लेकिन असरदार तरीका है कि आपका निवेश आपकी जिंदगी की गति के साथ आगे बढ़े। जैसे-जैसे आपकी आमदनी और जरूरतें बढ़ती हैं आप अपनी एसआईपी को बढ़ाकर नए सपनों और आर्थिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होंगे।

चक्रवृद्धि ब्याज की ताकत का जादू

हर साल एसआईपी की राशि थोड़ी सी भी बढ़ाने पर लंबे समय में आपकी संपत्ति में बड़ा फ्रक देखने को मिल सकता है। जितनी जल्दी और जितना अधिक आप निवेश करते हैं, रिटर्न उतना ही ज्यादा होता है। इसी को चक्रवृद्धि ब्याज की ताकत कहते हैं।

आईटीआर फाइलिंग : कुछ गलतियों की वजह से आ सकता है नोटिस

- जुर्माना भी लग सकता है और रिटर्न रिजेक्ट होने का भी रहता है खतरा
- टैक्सपेयर्स अक्सर आईटीआर फॉर्म चुनने में कर जाते हैं बड़ी गलतियां
- वेरिफिकेशन में गलती करते हैं, तो बढ़ सकती है आपकी परेशानी

जानकारी

बिजनेस डेस्क

इनकम टैक्स रिटर्न (आईटीआर) फाइल करना हर साल टैक्सपेयर्स के लिए एक जरूरी काम होता है, लेकिन कई बार इसमें छोटी-छोटी गलतियां उनके लिए भारी पड़ जाती हैं। वित्त वर्ष 2024-25 (असेसमेंट ईयर 2025-26) के लिए इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने की आखिरी तारीख 15 सितंबर 2025 तक है। इस बीच इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने आईटीआर-1, 2, 3 और 4 के लिए एक्सले सूटिफिकेट जारी कर दी है, जिससे प्रक्रिया शुरू करने का रास्ता साफ हो गया है। हालांकि, जल्दबाजी या जानकारी की कमी के कारण कई बार टैक्सपेयर्स ऐसी गलतियां कर बैठते हैं, जो नोटिस, जुर्माना या रिटर्न के रद्द होने का कारण बन सकती हैं। आइए जानते हैं, सात ऐसी आम गलतियों के बारे में, जिनसे टैक्सपेयर्स को बचना चाहिए।

गलत आईटीआर फॉर्म चुनना

सबसे आम गलती है गलत आईटीआर फॉर्म का चयन। हर फॉर्म खास तरह की आय और टैक्सपेयर्स के लिए बनाया गया है। मिसाल के तौर पर, अगर आपने शेयरों की बिक्री से 1.25 लाख रुपये से ज्यादा का लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेन कमाया है या आपके पास किसी विदेशी बैंक में अकाउंट है, तो आप आईटीआर-1 की जगह आईटीआर-2 भरना होगा। गलत फॉर्म चुनने से आपकी रिटर्न डिफिकिट मानी जा सकती है या इनकम टैक्स डिपार्टमेंट से नोटिस आ सकता है। इसलिए, अपनी आय के स्रोतों को ध्यान से देखें और सही फॉर्म चुनें।

सभी आय के स्रोत न बताना

कई टैक्सपेयर्स अपनी सारी आय को रिटर्न में नहीं दिखाते, वाह वही टैक्सबल हो या नहीं। मसलन, बचत खाते का ब्याज, फिक्स्ड डिपॉजिट का ब्याज, किराए की आय या शेयरों से डिविडेंड को छिपाना गलत है। भले ही बचत खाते के ब्याज पर 10,000 रुपये तक की छूट मिलती हो, लेकिन इसे रिटर्न में दिखाना जरूरी है। आय छिपाने से इनकम टैक्स डिपार्टमेंट की नजर में आप गलत ठहर सकते हैं, जिससे नोटिस या जुर्माना लग सकता है।



नौकरी बदलने पर आय छिपाना

अगर आपने वित्त वर्ष में नौकरी बदली है, तो दोनों एम्प्लॉयर्स से मिली आय को रिटर्न में दिखाना जरूरी है। दोनों की फॉर्म-16 को ध्यान से देखें और सुनिश्चित करें कि कोई आय छूट न जाए। कई बार टैक्सपेयर्स पुराने एम्प्लॉयर की आय या टीडीएस की जानकारी छेड़ देते हैं, जो गलत है। एआईएस में आपकी सारी आय की जानकारी होती है, इसलिए इसे छिपाने की कोशिश न करें, वरना नोटिस का सामना करना पड़ सकता है।

फॉर्म 26एस की जांच न करना

रिटर्न फाइल करने से पहले फॉर्म 26 एस और एनुअल इन्फॉर्मेशन स्टेटमेंट (एआईएस) की जांच करना जरूरी है। ये डॉक्यूमेंट्स आपकी आय, टीडीएस और बड़े लेनदेन की जानकारी देते हैं। अगर इनमें कोई गलती है, जैसे बैंक द्वारा काटा गया टीडीएस गलत दिख रहा हो, तो उसे ठीक करवाएं। इन डॉक्यूमेंट्स का मिलान फॉर्म-16, बैंक स्टेटमेंट और अन्य रिकॉर्ड से करें। अगर जानकारी में अंतर हुआ, तो इनकम टैक्स डिपार्टमेंट से नोटिस आ सकता है।

गलत डिडक्शन का दावा करना

कई टैक्सपेयर्स बिना सबूत के सेवशन 80सी, 80डी या अन्य छूट का दावा कर लेते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों की स्कूल फीस, एलआईसी प्रीमियम या

मेडिकल इश्योरेंस के लिए छूट तभी ले सकते हैं, जब आपके पास वैध डॉक्यूमेंट हों। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट अब एआईएस और एआईएस के जरिए ऐसी गलतियों को आसानी से पकड़ लेता है। अगर आप बिना सबूत के छूट लेते हैं, तो नोटिस मिल सकता है या रिटर्न रद्द हो सकता है।

विदेशी संपत्ति की जानकारी न देना

अगर आपके पास विदेशी बैंक खाता, शेयर या दूसरी संपत्ति है, तो उसे रिटर्न में बताना जरूरी है। बजट 2024 में नियमों में थोड़ी ढील दी गई है, जिसमें 20 लाख रुपये तक की चल संपत्ति को न दिखाने की छूट दी गई है। लेकिन इसके बावजूद, पूरी जानकारी देना अनिवार्य है। विदेशी संपत्ति छिपाने पर पहले 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लगता था, लेकिन नए नियमों के बावजूद सवाधानी बरती।

रिटर्न का वेरिफाई न करना

रिटर्न फाइल करने के बाद उसे 30 दिनों के अंदर वेरिफाई करना जरूरी है। यह सत्यापन आधार ओटीपी, नेट बैंकिंग या आईटीआर वी को डाक से भेजकर किया जा सकता है। अगर आप वेरिफाई नहीं करते, तो रिटर्न को अमान्य माना जाता है, जैसे कि आपने रिटर्न फाइल ही नहीं किया। कई टैक्सपेयर्स यह भूल जाते हैं, जिससे उनकी रिटर्न प्रक्रिया अधूरी रह जाती है और जुर्माना लग सकता है।

ऋण एमएफ लोन पर ब्याज दर सोने या एफडी पर लोन से अधिक, लोन लेने का फैसला करने से पहले सभी विकल्पों पर विचार करें

अपने म्यूचुअल फंड निवेश को बेचने के बजाय, आप उन पर लोन ले, इससे आपकी एसआईपी चलती रहेगी

म्यूचुअल फंड पर भी ले सकते हैं लोन, लेकिन जान लें कुछ बातें क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन की तुलना में एमएफ पर लोन सस्ता

ऋण की लागत व्यक्तिगत ऋण व क्रेडिट कार्ड ऋण से कम

म्यूचुअल फंड पर लोन का एक प्रमुख लाभ यह है कि आपको क्रेडिट कार्ड लोन या पर्सनल लोन की तुलना में कम ब्याज दर मिलती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि म्यूचुअल फंड पर लोन सुरक्षित होते हैं, यानी उनके पीछे कोई संपार्श्विक होता है। उदाहरण के लिए, आपको म्यूचुअल फंड पर लिए गए लोन पर 8-10% की ब्याज दर चुकानी होगी। यह आपके द्वारा चुनी गई बैंक और म्यूचुअल फंड योजनाओं के आधार पर अलग-अलग होगा। अगर आप डेट फंड योजनाओं की सुविधा गिरवी रखते हैं तो ब्याज दर कम होती है, और अगर आप इक्विटी फंड की सुविधा गिरवी रखते हैं तो ब्याज दर ज्यादा होती है। दूसरी ओर, क्रेडिट कार्ड लोन या पर्सनल लोन जैसे असुरक्षित लोन के मामले में, लोन आपकी किसी भी वित्तीय संपत्ति द्वारा समर्थित नहीं होता है। इसलिए, बैंक द्वारा उठाए जा रहे उच्च जोखिम के अनुरूप, आपसे 8-10% से अधिक ब्याज दर वसूलने की संभावना होती है।

गिरवी रखी गई एमएफ यूनिटों पर रिटर्न मिलता रहेगा

जब आप अपनी म्यूचुअल फंड यूनिट्स को गिरवी रखकर उन पर लोन लेते हैं, तो वे यूनिट्स बाजार में निवेशित रहती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब आप अपनी म्यूचुअल फंड यूनिट्स किसी बैंक में गिरवी रखते हैं, तो आप बैंक को यह अधिकार देते हैं कि वह म्यूचुअल फंड यूनिट्स को तभी बेचे जब आप डिफॉल्ट कर लें। लेकिन जब तक आप डिफॉल्ट नहीं करते, तब तक आपके निवेश बाजार से जुड़े रहते हैं और आप उन पर रिटर्न कमाते रहते हैं। इस प्रकार, आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आपकी वित्तीय योजना अभी भी बरकरार है और साथ ही आप किसी भी यूनिट को शुभान बिना अल्प सूचना पर आवश्यक पूंजी जुटा सकते हैं।

ऑनलाइन कर सकते हैं आवेदन

तकनीकी की बहालत, एस्बीआई, एचडीएफसी, आईसीआईआई जैसे कई बैंक अब आपके म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स पर ऑनलाइन लोन दे रहे हैं। आपको बस अपनी म्यूचुअल फंड यूनिट्स ऑनलाइन गिरवी रखनी हैं और अपने खाते में इंक्वैस्टिड लिमिटेड रकम कावां है। ओवरड्राफ्ट सुविधा का मतलब है आपके बैंक के साथ एक क्रेडिट समझौता जिसके तहत आप अपने खाते में जमा राशि से ज्यादा पैसे निकाल सकते हैं। इसकी एक पूर्व-स्वीकृत सीमा होती है।

समझदारी बिजनेस डेस्क

अगर आप भी लोन लेना चाहते हैं और म्यूचुअल फंड (एमएफ) में निवेश करते हैं तो आपके लिए म्यूचुअल फंड पर लोन लेना बेहतर विकल्प हो सकता है। चूंकि म्यूचुअल फंड पर लोन क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन की तुलना में काफी सस्ता होता है। हालांकि इसकी ब्याज दर सोने या एफडी पर लोन लेने की तुलना में अधिक हो सकती है। फिर भी लोन लेने से पहले सभी विकल्पों पर विचार कर लिया जाना चाहिए। इससे आप आसानी से और सस्ती ब्याज दरों पर लोन ले सकते हैं। जीवन में कई कारणों से कमी-कमी अस्थायी रूप से पैसों की तंगी का सामना करना पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, यह घर के नवीनीकरण, परिवार में शादी या किसी विकिस आपात स्थिति के कारण हो सकता है। ऐसी नकदी की तंगी की स्थिति में, सबसे पहला विचार यही आता है कि अपनी बचत का इस्तेमाल करें और नुकसान होने पर भी अपने निवेश को बेच दें। और अगर इससे भी काम न चले, तो आप ऋण लेने की सोचते हैं। हालांकि, निवेश को बेचना सबसे अच्छा उपाय नहीं है। अपने म्यूचुअल फंड निवेश को बेचने के बजाय, आप उन पर लोन ले सकते हैं। जो हा, जैसे आप लोन के लिए सोना और रिजल एस्टेट जैसी अन्य संपत्तियां गिरवी रख सकते हैं, वैसे ही आप बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) से अपने म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स पर लोन ले सकते हैं। एमएफ पर लोन लेने से पहले आप 6 प्रमुख बातों के बारे में जान लें। ये आपके काफी काम आएंगी।

म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स की एक सीमा तक ही ऋण मिलेगा

आपके म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स के बदले आपको मिलने वाले ऋण की राशि काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि आपने किस प्रकार की म्यूचुअल फंड योजना में निवेश किया है और आप किस वित्तीय संस्थान से ऋण लेंगे। उदाहरण के लिए, एचडीएफसी और आईसीआईआई जैसे बैंक आपको इक्विटी म्यूचुअल फंड के मामले में नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) के 50% तक और डेट म्यूचुअल फंड के मामले में 80% तक का लोन देते हैं। दूसरी ओर, एक्सिस बैंक आपकी डेट म्यूचुअल फंड योजनाओं के मूल्य के 85% तक और इक्विटी म्यूचुअल फंड योजनाओं के मूल्य के 60% तक का लोन प्रदान करता है।



सभी बैंक सभी म्यूचुअल फंडों पर ऋण नहीं देते

कई बैंक केवल उनके द्वारा चयनित म्यूचुअल फंड योजनाओं के आधार पर ही ऋण देते हैं। उदाहरण के लिए, एस्बीआई केवल एस्बीआई म्यूचुअल फंड की म्यूचुअल स्कीमों पर ही ऋण देता है। एचडीएफसी बैंक और आईसीआईआई बैंक भी उन स्कीमों के बारे में चयनात्मक हैं जिन पर वे ऋण देते हैं। ये दोनों निजी बैंक कंप्यूटर एज मैनेजमेंट सोल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड (सीएएमएस) के साथ पंजीकृत एसेट मैनेजमेंट कंपनियों द्वारा प्रबंधित म्यूचुअल फंड स्कीमों पर ऋण प्रदान करते हैं। इसी प्रकार, एक्सिस बैंक ने अपनी वेबसाइट पर म्यूचुअल फंड योजनाओं का एक सेट सूचीबद्ध किया है, जिसके आधार पर वह ऋण देता है।

मिलने वाला ऋण राशि की ऊपरी सीमा

किसी भी प्रकार के ऋण की तरह, म्यूचुअल फंड पर बिघ जाने वाले ऋणों की भी कुछ सीमाएं होती हैं। कई बैंकों ने आपको मिलने वाले ऋण की अधिकतम और न्यूनतम सीमा तय कर रखी है। उदाहरण के लिए, आईसीआईआई बैंक जैसे अधिकांश बड़े निजी बैंकों ने इक्विटी म्यूचुअल फंड के मामले में न्यूनतम ऋण राशि 50,000 रुपये और अधिकतम राशि 20 लाख रुपये तथा डेट म्यूचुअल फंड के मामले में 1 करोड़ रुपये तक निर्धारित की है। एनबीएफसी के मामले में, न्यूनतम और अधिकतम दोनों सीमाएं आमतौर पर ज्यादा होती हैं। उदाहरण के लिए, आदित्य बिड़ला फाइनेंस में न्यूनतम ऋण राशि 25 लाख रुपये और अधिकतम 10 करोड़ रुपये है। बजाज फिनसर्व के मामले में भी यही स्थिति है।

खबर संक्षेप



गेटवे इंटरनेशनल स्कूल में अभिव्यक्ति 6.0 का द्वितीय चरण संपन्न

सोनीपत। गेटवे इंटरनेशनल स्कूल, सोनीपत में शनिवार को अभिव्यक्ति 6.0 का द्वितीय चरण संपन्न हुआ। दो दिवसीय कार्यक्रम में नृत्य, कला, संगीत, गायन, वादन, चित्रकला, अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत भाषागत प्रस्तुतियों को प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। कार्यक्रम का आयोजन गेटवे इंटरनेशनल स्कूल के वैभवशाली सभागार एक्कम, एमपीएच मिनी थियेटर, आर्किटेक्चर कार्टों हाल और बास्केटबॉल कोर्ट में किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में विजित छात्रों को एकम सभागार में आज के कार्यक्रम के समापन समारोह के अंतर्गत प्रमाण पत्र और स्मृति चिह्नों से सम्मानित और अलंकृत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रिटायर्ड कर्नल राजवीर सिंह और विशिष्ट अतिथि अशोक बत्रा रहे।

जिला स्तरीय तीज महोत्सव कल

सोनीपत। उपायुक्त सुशील सारवान ने बताया कि 28 जुलाई को जिला परिषद हॉल में जिला स्तरीय तीज महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस महोत्सव में हरियाणा के सहकारिता मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा बतौर मुख्यातिथि शिरकात करेंगे। उन्होंने बताया कि अंबाला में राज्य स्तरीय महोत्सव का आयोजन किया जाएगा, जिसमें मुख्यमंत्री श्री नयब सैनी विडियों कॉन्फ्रेंस के माध्यम से प्रदेश में आयोजित जिला स्तरीय महोत्सव में भाग ले रही महिलाओं को संबोधित करेंगे। उपायुक्त ने बताया कि जिला स्तरीय तीज महोत्सव में स्वयं सहायता समूह से जिला की एक हजार महिलाएं भाग लेंगी।



गोहाना। पौधों की बढ़ी हुई टहनियों की कटाई करते हुए समिति के

पौधों की निराई-गुड़ाई व टहनियों की छटाई की

गोहाना। ग्राम सुधार समिति खन्दाई द्वारा पौधा संरक्षण अभियान के तहत गांव स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के मुख्य द्वार के दोनों तरफ लगाए गए पौधों की देखभाल की गई। समिति के सदस्यों ने पौधों की निराई-गुड़ाई के साथ बढ़ी हुई टहनियों की कटाई-छटाई की गई। गांव में पौधारोपण अभियान की शुरुआत ग्राम सुधार समिति खन्दाई ने ही की थी। समिति के सदस्यों ने पहले विद्यालय के बाहर जुलाई 2021 में पौधारोपण किया था। समिति के संस्थापक अध्यक्ष जगमोहन ने कहा कि समिति का उद्देश्य केवल पौधारोपण से ही पूरा नहीं होता बल्कि रोपित पौधों की देखभाल करके उनको पेड़ बनाना होता है।

करगिल विजय दिवस पर प्रताप स्कूल में हुआ वीर सैनिकों को समर्पित कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ खरखौदा

प्रताप सिंह मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, खरखौदा में करगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में वीर जवानों की शौर्यगाथा को नमन करते हुए एक विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य दया दहिया व शैक्षणिक निदेशक डॉ. सुबोध दहिया ने अपने प्रेरणादायक उद्बोधन से छात्र-छात्राओं को देशभक्ति का संदेश दिया। प्राचार्य दया दहिया ने अपने संबोधन में कहा कि करगिल युद्ध भारत की सैन्य वीरता, बलिदान और आत्मबल का



खरखौदा। शहीदों को समर्पित कार्यक्रम प्रस्तुत करते विद्यार्थी।

प्रतीक है। हमें अपने सैनिकों के त्याग और समर्पण से सीख लेकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देना चाहिए। डॉ. सुबोध दहिया ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि करगिल विजय दिवस केवल एक तिथि नहीं, बल्कि भारत के आत्मसम्मान और दृढ़ निश्चय का

प्रतीक है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपने जीवन में अनुशासन, निष्ठा और राष्ट्रप्रेम को स्वोपरि रखें। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय की प्राथमिक शाखा के नव्हे विद्यार्थियों ने 'जय जवान, जय भारत' विषय पर भावपूर्ण प्रस्तुतियां दीं। देशभक्ति गीत, कविता पाठ और सैनिकों के पराक्रम पर आधारित लघु नाटिका ने सभी को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम का समापन दो मिनट के मौन और 'वंदे मातरम्' गान के साथ हुआ। समस्त स्टाफ व विद्यार्थियों ने वीर सैनिकों के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

भूतपूर्व सैनिक संगठन गन्नौर ने करगिल योद्धाओं को दी श्रद्धांजलि

गन्नौर। भूतपूर्व सैनिक संगठन गन्नौर द्वारा करगिल विजय दिवस के अवसर पर एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें करगिल युद्ध में शहीद हुए जांबाज सैनिकों को याद कर उन्हें नमन किया गया। सभा के दौरान दो मिनट का मौन रखकर वीरगति को प्राप्त जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर 17 जाट रेजीमेंट के सुबेदार चांदराम ने 7 जुलाई 1999 को करगिल युद्ध के दौरान हुए संघर्ष में अपने अनुभव साझा किया। उन्होंने बताया कि कैसे दुश्मनों ने 4875 घाईट पर कब्जा कर लिया था और उनकी बीटीआर प्लाटून ने सीधे आमने-सामने की भिड़ंत में भाग लिया। इस दौरान उन्हें सिर में गोली लगने के बावजूद वे बहादुरी से डटे रहे, लेकिन बाद में युद्धभूमि में घायल होकर गिर पड़े। सिर में गोली लगने के बावजूद वे जीवित रहे इसे भगवान की कृपा और भारत मां का आशीर्वाद बताया गया। इसके बाद उनका तुरंत सफल आपरेशन किया गया। इस घटना के बाद वह स्वास्थ्य हुए और फिर



गन्नौर। श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित भूतपूर्व सैनिक संगठन के पदाधिकारी।

अपनी ड्यूटी च्वाइन की। इस सभा में ओमप्रकाश मलिक, कैप्टन रिखपाल धनखड़, नवीन प्रताप त्यागी, साजैट नफे सिंह, सुबेदार ईश्वर, नाहर सिंह, पीओ रतन मलिक, आनंद प्रकाश व वीरनारी बाला सहित अन्य मौजूद रहे।

जेएलएन विद्यालय में शिक्षक-शिक्षिकाओं ने झूला झूलने का लुफ्त उठाया

तीज महोत्सव को लेकर दिखा उत्साह

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गोहाना

जेएलएन वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गोहाना में शनिवार को तीज महोत्सव मनाया गया। समारोह में गुरुजी तीज के गीतों पर समूह लोक नृत्य में जमकर झूमे। गुरुजियों ने झूला झूलने का भी खूब आनंद लिया। तीज महोत्सव विद्यालय की प्रबंधक कृष्णा शर्मा के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ। संयुक्त अध्यक्षता विद्यालय के एमडी सुनील शर्मा और प्राचार्य डॉ. सचिन शर्मा ने की। संयोजन उप प्राचार्य सूरत शर्मा का रहा। प्राचार्य डॉ. सचिन ने कहा कि हरियाली तीज एक ऐसा त्योहार है जो हमें प्रकृति की सुंदरता और इसके संरक्षण के महत्व को समझने का अवसर देता है। इस समय हमें अधिक से अधिक पौधे रोपने चाहिए। इस त्योहार को हमें मिलकर मनाना चाहिए ताकि हमारे सामाजिक रिश्ते मजबूत बने रहें। उन्होंने कहा कि यह दिन हमें माता पार्वती और शिव की याद दिलाता है।



गोहाना। समारोह में झूला झूलते हुए गुरुजी। फोटो : हरिभूमि

हरियाली तीज उत्सव एवं परिवार मिलन समारोह आज

गन्नौर। भारत विकास परिषद, गन्नौर शाखा (हरियाणा मध्य प्रान्त) द्वारा हरियाली तीज पर हरियाली तीज उत्सव एवं परिवार मिलन समारोह का आयोजन 27 जुलाई को पारस वाटिका में आयोजित किया जाएगा। परिषद की कोषाध्यक्ष निशा कौशिक ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य पारंपरिक लोकसंस्कृति को बढ़ावा देना, महिलाओं एवं परिवारों को एक साथ जोड़ना और समाज में सहयोग, संस्कार, सेवा व समर्पण की भावना को सुदृढ़ करना है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में परिवार की महिलाएं लाल, हरा या पीला सूट या साड़ी पहनकर आएंगी ताकि तीज के पारंपरिक रंगों से वातावरण और अधिक जीवंत हो सके। पुरुषों से पारम्परिक वेशभूषा में आने का आग्रह किया गया है। सदीप सिंघल (अध्यक्ष), विकास भगवती (सचिव) भावना जया (महिला संयोजिका), मनोज जैन, अंकित त्यागी एडवोकेट, राज अरोड़ा, और मिताली सोनी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहेगा।

प्रयास इंटरनेशनल स्कूल में हरियाली तीज का रंगारंग कार्यक्रम

गन्नौर। प्रयास इंटरनेशनल स्कूल में हरियाली तीज का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस विशेष अवसर पर विद्यालय के एलीट हाउस द्वारा एक मध्य सांस्कृतिक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं ने रंगारंग प्रस्तुतियां देकर दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम में हरियाणवी नृत्य, नाटिका और हरियाणवी संस्कृति पर आधारित एक प्रदर्शनी प्रस्तुत की गई, जिसे सभी ने खूब सराहा। पारंपरिक परिधानों में सजे विद्यार्थियों ने मंच पर अपनी कला का प्रदर्शन किया। प्राचार्य सुरेश खड्का और उप प्रधानाचार्या दीपमाला ने विद्यार्थियों की सराहना की। प्रबंध निदेशक अमित बत्रा, डा. सुनीरा जैन और रजिता बत्रा ने सभी का आभार जताया।



गन्नौर। हरियाली तीज रंग-बिरंगे परिधानों में सजे स्कूल के छात्र।

इंडियन मॉडर्न स्कूल में 'हरियाली तीज महोत्सव की दिखी धूम'



सोनीपत इंडियन मॉडर्न स्कूल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान झूला झूलती प्रबंधक साथ में विद्यालय स्टाफ।

सोनीपत। इंडियन मॉडर्न स्कूल में उल्लास और रंगारंग सांस्कृतिक गरिमा के साथ हरियाली तीज का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों और शिक्षकों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से हुए सभां बांध दिया और सजीले झूलने पर पींग भरते हुए हरियाली तीज के पारंपरिक महत्व को जीवंत कर दिया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रचलन और वंदना के साथ हुई। छात्राओं द्वारा प्रस्तुत लोक नृत्य, तीज गीत और फैशन परेड ने दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया। शिक्षकों ने भी विशेष रूप से तैयार की गई प्रस्तुति में भाग लेकर छात्रों का उत्साहवर्धन किया, जिससे विद्यालय परिसर उत्सव के रंग में रंग गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य राजेंद्र सिंह गालह्याण ने तीज पर्व की सांस्कृतिक और सामाजिक महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हरियाली तीज नारी शक्ति, प्रकृति प्रेम और पारंपरिक मूल्यों का प्रतीक है। कार्यक्रम के अंत में उत्कृष्ट प्रस्तुतियों के लिए छात्रों को सम्मानित भी किया गया। पूरा माहौल लोक-संगीत, उत्सव और उल्लास से सराबोर रहा।

हेरिटेज वर्ल्ड इंटरनेशनल में गनाया तीज महोत्सव

खरखौदा। हेरिटेज वर्ल्ड इंटरनेशनल स्कूल में तीज महोत्सव पारंपरिक उल्लास और सांस्कृतिक रंगों के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में वीर फाउंडेशन चेयरमैन रणवीर सिंह ने विशेष रूप से शिरकात की। उन्होंने भारतीय संस्कृति को संजोने की दिशा में स्कूल द्वारा किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की। मौक पर जुनियर और सीनियर विंग के विद्यार्थियों ने हरियाणवी, पंजाबी और राजस्थानी लोकनृत्यों की सुंदर प्रस्तुतियां दीं। पारंपरिक परिधानों में सजे बच्चों ने झूला झूलते हुए सार्वजनिक गीतों पर उत्साहपूर्वक नृत्य किया। स्कूल की प्रिंसिपल सुमित राणा ने कहा ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में सांस्कृतिक मूल्यों की समझ और आत्मविश्वास को बढ़ावा देते हैं। चेयरमैन अशोक कुमार दहिया ने कहा कि हमें शिक्षा के साथ-साथ भारतीय परंपराओं और रीति-रिवाजों को जीवंत बनाए रखने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।



सोनीपत। ज्ञान गंगा क्लोबल स्कूल (जी-3) में हरियाली तीज महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। छात्राओं ने जहां मेहंदी प्रतियोगिता में उत्साह पूर्वक हिस्सा लेकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया, वहीं प्राइमरी कक्षाओं के नौगिनहलोंने झूला झूलकर तीज का जमकर आनंद उठाया। हरियाली तीज महोत्सव में छात्र-छात्राओं ने अपनी रंगारंग प्रस्तुति से सभां बांध दिया। स्कूल परिसर में आयोजित तीज महोत्सव में शिरकात करते हुए स्कूल के चेयरमैन सुधीर जैन, सीईओ संजय जैन, डायरेक्टर ध्रुव जैन, प्राचार्यां गीता चोपड़ा व उप प्राचार्यां रुक्मा बस ने छात्र-छात्राओं का हौसला बढ़ाया। चेयरमैन सुधीर जैन ने कहा कि तीज का त्योहार आस्था, उमंग, सौंदर्य, प्रेम व हरियाली का प्रतीक है जो सबके मन को नई तरंग व आशा से भर देता है। मौके पर कोऑर्डिनेटर नीरजा, महक व गीता राणा, श्वेता, नमिता, मधु, मीनाक्षी, मोनिका, वीना, कुसुम, ज्योति, सोनिया मदान, निशा, सीमा रानी, पारुल, कावेरी, मीनू, अर्चना, सुष्मा, आहुति, स्वाति, खेल इंद्राजं संजीत, पीटीआई राखी सहित सभी स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।

छात्राओं ने मेहंदी प्रतियोगिता में बिखेरे रंग

सोनीपत। ज्ञान गंगा क्लोबल स्कूल (जी-3) में हरियाली तीज महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। छात्राओं ने जहां मेहंदी प्रतियोगिता में उत्साह पूर्वक हिस्सा लेकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया, वहीं प्राइमरी कक्षाओं के नौगिनहलोंने झूला झूलकर तीज का जमकर आनंद उठाया। हरियाली तीज महोत्सव में छात्र-छात्राओं ने अपनी रंगारंग प्रस्तुति से सभां बांध दिया। स्कूल परिसर में आयोजित तीज महोत्सव में शिरकात करते हुए स्कूल के चेयरमैन सुधीर जैन, सीईओ संजय जैन, डायरेक्टर ध्रुव जैन, प्राचार्यां गीता चोपड़ा व उप प्राचार्यां रुक्मा बस ने छात्र-छात्राओं का हौसला बढ़ाया। चेयरमैन सुधीर जैन ने कहा कि तीज का त्योहार आस्था, उमंग, सौंदर्य, प्रेम व हरियाली का प्रतीक है जो सबके मन को नई तरंग व आशा से भर देता है। मौके पर कोऑर्डिनेटर नीरजा, महक व गीता राणा, श्वेता, नमिता, मधु, मीनाक्षी, मोनिका, वीना, कुसुम, ज्योति, सोनिया मदान, निशा, सीमा रानी, पारुल, कावेरी, मीनू, अर्चना, सुष्मा, आहुति, स्वाति, खेल इंद्राजं संजीत, पीटीआई राखी सहित सभी स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।



सोनीपत। कार्यक्रमें के दौरान विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए।

शास्त्रीय नृत्य प्रतियोगिता में बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

सोनीपत। ऋषिकुल विद्यापीठ गोहाना रोड में भारतीय विकास परिषद की ओर से 'शास्त्रीय नृत्य प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता दो वर्गों में हुई। सभी छात्रों ने अपनी सुंदर-सुंदर प्रस्तुतियों से सब का मन मोह लिया। प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि नीरज शर्मा ने बच्चों का उत्साह मजबूत करते हुए कहा कि नृत्य हमारे जीवन का हिस्सा होना ही चाहिए। नृत्य का नाम सुनते हैं सबके चेहरे पर खुशी दिखाई देती है। इन नव्हे कलाकारों की कला को देखकर सब मंत्र मुग्ध रह गए। सभी प्रतिभागियों ने शास्त्रीय नृत्य में अपना शत प्रतिशत दिया। निर्णायक मंडल ने विजेताओं का फैसला किया गया, जिन्हें पुरस्कृत किया गया।



सोनीपत। कार्यक्रमें के दौरान विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए।

सेना के पराक्रम का प्रतीक करगिल दिवस : डॉ. सुरेश

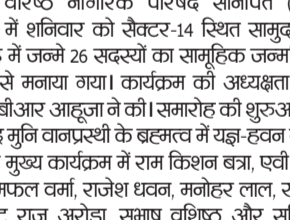
गोहाना। पुराना बस अड्डा गोहाना स्थित शहीद स्मारक पर शनिवार को करगिल विजय दिवस मनाया गया। समारोह में मोर्चा के सदस्यों ने करगिल युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले करगिल के हीरो कैप्टन विक्रम बत्रा, व्हेनडियर योगेंद्र सिंह यादव व सुबेदार संजय कुमार सहित 527 जांबाज वीर सज्जुतों को श्रद्धांजलि अर्पित करके नमन किया। मुख्य वक्ता आजाद हिंद देशभक्त मोर्चा के निदेशक डॉ. सुरेश सेंतिया ने कहा कि करगिल विजय दिवस भारतीय सेना के शौर्य और पराक्रम का प्रतीक है। यह दिवस पूरे देश के लिए गर्व का दिन है। कार्यक्रम की अध्यक्षता मोर्चे के मुख्य संरक्षक आजाद सिंह दांगी ने की। उन्होंने कहा कि करगिल का युद्ध पाकिस्तान द्वारा बड़े-बड़े म्यूंबे बालाकर भारत की भूमि हथियाने के साथ अपने यहां चल रहे आंतरिक कलह से अपने देश के लोगों का ध्यान भटकाने के कारण किया था। इस मौके पर भाग सिंह फौजी, मदनलाल अजी, सुभाष शर्मा, सोनू सेलवान, कृष्ण पावाल, हर भगवान चोपड़ा, राकेश भारद्वाज व सुलतान सेन मौजूद रहे।



सोनीपत। करगिल युद्ध के शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए मोर्चा के सदस्य।

वरिष्ठ नागरिक परिषद ने मनाया सामूहिक जन्मदिवस समारोह

सोनीपत। वरिष्ठ नागरिक परिषद सोनीपत (पंजीकृत) के तत्वावधान में शनिवार को सेक्टर-14 स्थित सामुदायिक भवन में जुलाई माह में जन्मे 26 सदस्यों का सामूहिक जन्मदिवस समारोह हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता परिषद प्रधान इजीनियर बीआर आहूजा ने की। समारोह की शुरुआत सुबह 8 बजे महात्मा वेद मुनि वानप्रस्थी के बहमचल में यज्ञ-हवन से हुई। 10 बजे से शुरू हुए मुख्य कार्यक्रम में राम किशन बत्रा, एवी भारती, हरबंस अरोड़ा, रामफल वर्मा, राजेश धवन, मनोहर लाल, रविंद्र कुकरेजा, कवि रमजत राज अरोड़ा, सुभाष वशिष्ठ और सविता कुमार ने सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक भजनों सहित मनोरंजक प्रस्तुतियां दीं। मंच संचालन महासचिव सुभाष वशिष्ठ ने किया। समारोह में जुलाई में जन्म लेने वाले सदस्यों को अंग वस्त्र, पुष्प गुच्छ व सुंदर बैग देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में 100 से अधिक वरिष्ठ सदस्य उपस्थित रहे। समापन पर महात्मा वेद मुनि



हरिचंद स्नेही को सम्मानित करते पदाधिकारी एवं सदस्यगण।



ने सभी को आशीर्वाद दिया। मौके पर ओपी एलावादी, डॉ. डीबी रावल, हरिचंद स्नेही, हरभगवान रहेजा, मदनलाल, अशोक भगत, मुकेश, सुमन भगत, भावना धवन, सुखप्रिय शारत्री, शिवदयाल घुम, राजपति दहिया व अशोक आर्य आदि का सक्रिय सहयोग रहा।

वृक्षारोपण अभियान में 300 पौधे लगाए पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

सुमीत अलख ने कोमल सिंह को मोमेटो भेंट कर सम्मानित किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

महाराणा प्रताप चौक, सामान्य अस्पताल के सामने संगत समतावाद सोनीपत के सानिध्य में वृक्षारोपण अभियान आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 7:30 बजे किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में कोमल सिंह (पुलिस उपमहानिरीक्षक, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, ग्रुप केंद्र खेवड़ा) मौजूद रहे। उनके साथ बाल कृष्ण राम (कमांडेंट), वेदपाल सिंह, सुनील डोब्रियाल (उप कमांडेंट) और हनुमान (सुबेदार मेजर) भी पहुंचे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर



सोनीपत। पौधारोपण करते हुए मुख्यातिथि साथ में अन्य।

पर विधायक निखिल मदान, मेयर राजीव जैन, सुमित अलख भी मौजूद रहे। इस अवसर पर प्रेम प्रकाश ढल, रंजन सहगल, चौधरी रामफल (ग्रुप बसोदारी), ब्रह्मकुमारी बहन सुनीता, दिलबाग सिंह (स्टेट अवाडी), रमेश मदान, हवा सिंह (पहलवान), सतीश कुमार (एलआईसी), बहन दिव्या और मनीष ट्री ने सक्रिय भागीदारी निभाई। पार्क ब्रह्म स्थल पर विधायक निखिल मदान और मेयर राजीव जैन ने भी कोमल सिंह के साथ पौधारोपण किया। कार्यक्रम के अंतर्गत सामान्य अस्पताल के सामने सेक्टर 13 की खाली भूमि पर

300 पौधे लगाए और वितरित किए गए। उपमहानिरीक्षक कोमल सिंह ने पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ युवाओं को नरेश से दूर रहने और समाजोपयोगी कार्यों से जुड़ने का आह्वान किया। उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों ने उनके संदेश का करतल ध्वनि से स्वागत किया। आयोजकों ने कार्यक्रम के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागरूकता फैलाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के अंत में सुमीत अलख ने कोमल सिंह को उनकी समाज सेवा और अनुकरणीय सेवाओं के लिए मोमेटो भेंट कर सम्मानित किया। इसके उपरांत कोमल सिंह ने पर्यावरण कार्यकर्ता मनीष ट्री को मानव सेवा ट्रस्ट की ओर से उनके उत्कृष्ट पर्यावरणीय योगदान हेतु सम्मानित किया।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

मिड डे मील वर्कर्स यूनिन हरियाणा के आह्वान पर शुक्रवार को मिड डे मील वर्कर्स ने सिविल अस्पताल सोनीपत से विधायक निखिल मदान के कार्यालय तक रोप मार्च निकाला और अपनी मांगों को लेकर यात्रा प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने अपनी मांगों का ज्ञापन विधायक कार्यालय पर सुरेश भारद्वाज को सौंपा। प्रदर्शन का नेतृत्व सीटू के वरिष्ठ नेता आनंद शर्मा और यूनिन की कोषाध्यक्ष सुमन सैनी ने किया। वर्कर्स ने केंद्र और राज्य सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए बैनर और झंडों के साथ अपनी समस्याएं रखीं। उन्होंने बताया कि कई माह से मानदेय लंबित है, वहीं की राशि नहीं



सोनीपत। विधायक के आवास पर ज्ञापन देने पहुंचे यूनिन के पदाधिकारी।

मिल रही, मानदेय में कटौती की जा रही है और 11 महीने काम करने के बावजूद सिरफ 10 महीने का भुगतान किया जा रहा है। प्रदर्शन में मुकेश, शकुल्ला, शीला, मनीषा, कमलेश, सुनीता सहित अन्य वर्कर्स ने भी भाग लिया और कहा कि 3 अगस्त को पानीपत में शिक्षा मंत्री महोपाल दांडा के आवास पर राज्य स्तरीय आक्रोश प्रदर्शन किया जाएगा। वर्कर्स ने सरकार से मांग की कि उन्हें पक्के कर्मचारी का दर्जा दिया जाए और जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक न्यूनतम 26000 रुपये मासिक वेतन दिया जाए। साथ ही, सेवानिवृत्ति लाभ और दुर्घटना में मुआवजा देने की भी मांग उठाई।

फोटो : हरिभूमि

बुलेट ट्रेन के बाद अब आ रहा

हाइएस्ट स्पीड वाला बुलेट इंटरनेट



कवर स्टोरी/ सुनील कुमार महला

हाल ही में जापान के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशंस टेक्नोलॉजी (एनआईसीटी) के रिसर्चर्स ने 1.02 पेटाबिट्स प्रति सेकेंड की अविश्वसनीय इंटरनेट स्पीड हासिल करके विश्व रिकॉर्ड कायम किया है। जापान के एनआईसीटी ने सुमितोमो इलेक्ट्रिक और यूरोपीय पार्टनर के साथ मिलकर यह उपलब्धि हासिल की है। उनके यूनिट 19 कोर ऑप्टिकल फाइबर केबल ने अविश्वसनीय स्पीड से डाटा ट्रांसमिट किया।

अविश्वसनीय है इसकी स्पीड

एक रिपोर्ट के अनुसार, नई तकनीक के द्वारा 1.02 मिलियन गीगाबाइट (जीबी) डाटा एक सेकेंड में डाउनलोड किया गया। यह स्पीड इतनी ज्यादा है कि इसके बारे में सोच पाना भी मुश्किल है। जापान की इस तकनीक को वैश्विक रूप से डाटा ट्रांसफर, स्ट्रीमिंग और कनेक्टिविटी के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय कदम के रूप में देखा जा रहा है। बताया चलें कि जापान की इस लेटेस्ट इंटरनेट नेटवर्क की स्पीड 1.02 पेटाबिट्स प्रति सेकेंड है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह करीब 10 लाख जीबी प्रति सेकेंड के बराबर है। यह इंटरनेट स्पीड इतनी फास्ट है कि इस स्पीड का इस्तेमाल करके कुछ ही सेकेंड्स में फिल्म ही नहीं, बल्कि पूरी की पूरी लाइब्रेरी तक डाउनलोड की जा सकती है। वास्तव में जापान की यह उपलब्धि डेटा ट्रांसमिशन तकनीक में एक महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी कदम है। जापान की यह स्पीड अमेरिका की वर्तमान इंटरनेट डाटा एवरेज इंटरनेट स्पीड से 3.5 मिलियन गुना अधिक है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह स्पीड अमेरिका के औसत इंटरनेट कनेक्शन से 35 लाख गुना ज्यादा है। भारत की औसत इंटरनेट गति से यह 1.6 करोड़ गुना तेज बताई जा रही है। रिसर्चर्स के अनुसार इतनी स्पीड से एक साथ 1 करोड़ 8 हजार वीडियो स्ट्रीम किए जा सकते हैं। यानी 10 लाख जीबी प्रति सेकेंड के हिसाब से यह स्पीड मिलेगी, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। जापान द्वारा हाइ स्पीड इंटरनेट तकनीक का विकास, आने वाले समय में 6जी नेटवर्क, क्लाउड सिस्टम्स, अंडरसी डेटा केबल और एआई जैसे उभरते क्षेत्रों में नई क्रांति लेकर आएगा।

नई तकनीक का किया इस्तेमाल

जापान ने सिंगल कोर के बजाय 19 कोर ऑप्टिकल फाइबर सिस्टम और उन्नत एंग्लीफायर तकनीक की मदद से इतनी तेज इंटरनेट स्पीड को हासिल करने में सफलता हासिल की है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इन स्पेशल केबल का इस्तेमाल कर शोधकर्ताओं को टीएम ने बिना किसी स्पीड लॉस के 1800 किलोमीटर से भी अधिक की दूरी तक भारी मात्रा में डेटा भेजने में सफलता पाई। उन्होंने ट्रांसमीटर, रिसीवर और लूपिंग सर्किट के सेटअप का उपयोग किया, जिससे डेटा फुल पावर से फ्लो रखने में मदद मिली। इस ऐतिहासिक उपलब्धि का अर्थ है कि एक सेकेंड में 10,000 से अधिक फिल्में डाउनलोड की जा सकती हैं। गौरतलब है कि मार्च 2024 में भी जापान ने ही 402 पेटाबिट्स प्रति सेकेंड (यानी 50,250 जीबीपीएस) की स्पीड का रिकॉर्ड बनाया था। लेकिन इस बार नई तकनीक ने इस आंकड़े को दोगुना से अधिक कर दिया।

कई सेक्टरों को मिलेगा लाभ

कहना गलत नहीं होगा कि जैसे-जैसे एआई, 8के स्ट्रीमिंग, क्लाउड गेमिंग और ऑनगैमिंग रिगलिटि जैसे सेक्टर आगे बढ़ेंगे, ऐसे ब्रेकथ्रू तकनीकों की जरूरत भी बढ़ेगी। वास्तव में यह तकनीक कृत्रिम बुद्धिमत्ता, एआई, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, आइओटी और ग्लोबल डिजिटलीकरण की बढ़ती मांगों को पूरा करने में मदद करेगी। ज्यादा तेज इंटरनेट, ज्यादा तेज विकास भी लेकर आएगा। स्मार्ट सिटी, रिमोट हेल्थ केयर और ऑनलाइन शिक्षा जैसे क्षेत्रों में बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा।

जापान ने सिद्ध की श्रेष्ठता

बताते चलें कि दुबई, इंटरनेट की स्पीड के मामले में दुनिया में दूसरे नंबर पर, हॉंग कॉन्ग तीसरे नंबर पर, फ्रांस चौथे नंबर

करीब साठ साल पहले दुनिया की पहली बुलेट ट्रेन बनाने वाले देश जापान ने अब बुलेट स्पीड वाले इंटरनेट को बनाने में सफलता हासिल की है। इस नई तकनीक से अविश्वसनीय तेज गति से डाटा ट्रांसफर हो सकेगा। इस नई तकनीक की क्या है विशेषताएं, इससे क्या होंगे भविष्य में फायदे, इनके बारे में आप भी डिटेल् में जरूर जानना चाहेंगे।

पर और आइसलैंड पांचवें नंबर पर आता है। कहना गलत नहीं होगा कि जापान ने अपने तकनीकी नवाचार से ग्लोबल डिजिटल डिफेंस को भी उजागर किया है। आज एआई का दौर है। दुनिया में ज्यादातर काम-काज इंटरनेट तकनीक से किए जा रहे हैं। आने वाले समय में इंटरनेट और तकनीक का उपयोग निश्चित ही अधिक बढ़ेगा। ऐसे में जापान की इंटरनेट स्पीड से जापान के साथ ही साथ दुनिया के अन्य देशों को भी इसके लाभ मिल सकेंगे। आने वाले समय में एआई, 6जी नेटवर्क, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और वर्चुअल रिगलिटि जैसी उभरती तकनीकों के लिए अत्यधिक डाटा ट्रांसमिशन की जरूरत होगी। जापान की यह तकनीक इन जरूरतों को पूरा करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। हालांकि यह तकनीक अभी प्रयोगशाला तक ही सीमित है और इसे आम उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराए जाने में वक्त लगेगा। लेकिन भविष्य की इंटरनेट कनेक्टिविटी के लिहाज से यह एक मजबूत नींव तो रखती ही है।



अभी प्रयोगशाला तक ही सीमित है और इसे आम उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराए जाने में वक्त लगेगा। लेकिन भविष्य की इंटरनेट कनेक्टिविटी के लिहाज से यह एक मजबूत नींव तो रखती ही है।

हमें भी करने होंगे प्रयास

जापान की यह उपलब्धि हमें भी अपनी इंटरनेट गति को बढ़ाने की जरूरत की याद दिलाती है। गौरतलब है कि इंटरनेट की स्पीड के मामले में भारत टॉप 10 देशों में भी शामिल नहीं है। यहां पर मोबाइल इंटरनेट स्पीड 100.78 एमबीपीएस है, जबकि एवरेज ब्रॉडबैंड स्पीड 63.55 एमबीपीएस है। वास्तव में यह स्पीड विश्व के बाकी देशों के मुकाबले काफी कम है। आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में उतनी इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं है, जितनी होनी चाहिए। आज भी भारतीय ग्रामीण और दूर-दराज के क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी और 5जी नेटवर्क का विस्तार काफी चुनौतियों से भरा है। आज भारत लगातार डिजिटल इंडिया की ओर बढ़ रहा है। इंटरनेट ही शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आर्थिक विकास के लिए नए अवसर खोल सकता है। इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ने से अनेक प्रकार के अवसर देश में पैदा होंगे। इंटरनेट स्पीड बढ़ेगी तो डिजिटल इंडिया को गति मिलेगी और डिजिटल इंडिया से रोजगार के अवसर बढ़ने, अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने और बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण होगा। इसके लिए आज जरूरत इस बात की है कि हम अपने देश के डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ाएं। *



यंगस्टर्स को सर्वाधिक अट्रैक्ट करते हैं देश के टॉप करियर मैगनेट सिटीज

प्राइवेट सेक्टर में अगर देश के टॉप करियर मैगनेट सिटीज की बात करें तो बंगलुरु, हैदराबाद और चेन्नई सबसे आगे हैं। इनके अलावा कुछ और शहर भी आगे बढ़ रहे हैं। वर्तमान समय और भविष्य के जाँव के लिहाज से हॉट सिटीज पर एक नजर।

जॉब ट्रेड / कीर्तिशेखर

करीब और लगातार ग्रोथ करने के लिहाज से इस समय भारत का सबसे अच्छा शहर बंगलुरु को माना जाता है। सैलरी के मामले में भी इस समय देश के टॉप पांच शहरों में सबसे पहला नंबर बंगलुरु का ही है और आने वाले अगले पांच सालों तक बंगलुरु, हैदराबाद, मुंबई, अहमदाबाद, पुणे, चेन्नई और गुरुग्राम यही टॉप करियर शहर होंगे। अगले पांच सालों तक भी भारत के इन्हीं शहरों में सबसे अच्छा भविष्य तलाशने वाले युवक आकर्षित होंगे।

हाई सैलरी देने वाले शहर: 'जॉब्स एंड सैलरीज प्राइमर फाइनेंशियल इंटर-2024' टीएम लीज के हिसाब से बंगलुरु शहर में औसत समग्र मासिक वेतन 29,500 रुपए है, जो कि देश के बाकी सभी महानगरों के मुकाबले 8 से 15 फीसदी ज्यादा है। इस मामले में एक अखबार ने भी हाल के दिनों में सैलरी और करियर के भविष्य के लिहाज से एक सर्वे किया, रिस फॉर टैलेंट। इस सर्वे में भी बंगलुरु जूनियर, मिड और सीनियर यानी तीनों ही वेतन श्रेणियों में क्रमशः रुपए 7.2 लाख, रुपए 20.4 लाख और रुपए 37.2 लाख के औसत से शेष सभी भारतीय शहरों में शीर्ष पर है। रैंडस्टैड 2025 रिपोर्ट बताती है कि यहां जूनियर भूमिकाओं का सैलरी पैकेज देश के दूसरे सभी बड़े शहरों के मुकाबले 23 परसेंट तक ज्यादा है और मिड लेवल में यह 9 फीसदी ज्यादा है।

ये सिटीज भी बढ़ रहे हैं आगे: एक नए सर्वे (इनडीड) के मुताबिक यह बात भी सामने आ रही है कि हैदराबाद और चेन्नई भी बहुत तेजी से अगले पांच सालों में सैलरी देने के मामले में देश के टॉप शहर बनने का मुकाबला करेंगे। लेकिन अभी तक ज्यादातर अनुमान यही है कि 2030 तक यह सहरा बंगलुरु के सिर पर ही रहेगा। हैदराबाद और चेन्नई के बाद जो तीसरा शहर इस मामले में चौकाने वाली रफ्तार से, विशेषकर सैलरी के मामले में आगे बढ़कर आ रहा है, वह न तो दिल्ली है, न मुंबई, यह अहमदाबाद है। इसकी हाल के सालों में सैलरी ग्रोथ, दूसरे मेट्रो सिटीज के मुकाबले 20 से 25 फीसदी ज्यादा रही है।

हालांकि सर्वे से निकला डाटा कोई तथ्य नहीं होता, जिसके आधार पर माना जाए कि यह बात सही फीसदी सही है। यह भी एक अनुमान ही है, क्योंकि जहां दूसरे कई डाटा बंगलुरु को सैलरी के लिहाज से देश का टॉप शहर बता रहे हैं, वहीं इनडीड यह तथ्य चेन्नई को दे रहा है।

इसलिए बंगलुरु है सबसे आगे: बंगलुरु इस समय ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (जीसीसी) हब बन चुका है। भारत के 40 फीसदी से ज्यादा जीसीसी बंगलुरु में ही हैं। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, गोल्लमैन सैक्स जैसी 250 से ज्यादा बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में अपने मुख्य कार्यकारी दफतरो के साथ बंगलुरु में मौजूद हैं। यही नहीं ये तमाम कंपनियां अपना आरएंडडी (रिसर्च एंड डेवलपमेंट) सेंटर भी यहीं चलाती हैं। यहीं से नए उत्पादों और नवाचारों को बाजार में उतारती हैं। इसी तरह बंगलुरु इस समय देश का स्टार्टअप और डीप टेक इकोसिस्टम का भी हब है। 144 फीसदी भारतीय युनिवर्सिटी बंगलुरु में ही स्थित हैं या यहीं से निकले हैं। एआई, सेमिकंडक्टर और एयरोस्पेस केंद्रित स्टार्टअप बंगलुरु में ही हैं और इन्हीं की बदौलत यह शहर वेतन प्रतिस्पर्धा में देश के दूसरे महानगरों के मुकाबले बहुत ऊपर है। बंगलुरु में टैलेंट क्लस्टर बन चुका है, साथ ही यहां एक नई तरह की टैलेंट ऑरिएंटेड जीवनशैली विकसित हो रही है। इस शहर में 20 लाख से ज्यादा आईटी पेशेवर कार्यरत हैं तथा ये दुनिया के गिने चुने उन शहरों में से एक बन चुका है, जो विश्व स्तरीय को-वर्किंग स्पेस मुहैया कराते हैं।

हैदराबाद भी है मुकाबले में: हैदराबाद और चेन्नई भी बहुत पीछे नहीं हैं। पिछले कुछ सालों में हैदराबाद ने फिर से तेज छलांग लगाई है और विभिन्न सर्वेक्षणों में भले वह अभी बंगलुरु से थोड़ा नीचे हो, लेकिन माना जाता है कि अगले दो सालों में यानी 2027 तक हैदराबाद नौरियां उपलब्ध कराने के मामले में बंगलुरु को भी पीछे छोड़ सकता है। सिर्फ नौकरियां ही हैदराबाद में ज्यादा नहीं पैदा होंगी बल्कि आने वाले दिनों में अनुमान है कि यहां वेतन वृद्धि भी देश के दूसरे शहरों में सबसे ज्यादा होगी। हैदराबाद में वेतन वृद्धि का सबसे तेज रिकॉर्ड पहले रह चुका है और फिर से यह उसी दिशा में आगे बढ़ता लग रहा है। *



टेक्नोलाइफ/ लोकगिर गौतम

आज के दौर में मॉडर्न डेटिंग एप्स, संबंधों की दुनिया में अहम असर डाल रहे हैं। इस 21वीं सदी के दूसरे दशक में दुनिया में रिश्तों के निर्माण की प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन आया है। प्रेम पत्रों, पारिवारिक मेल-मिलापों और सामाजिक मेलों की जगह अब मोबाइल स्क्रीन और तरह-तरह के एप्स ने ले ली है। टिंडर, बंबल, हिज, ओके कुपिड जैसे मॉडर्न डेटिंग एप्स ने आज रिश्तों की दुनिया को पूरी तरह बदल दिया है। ये तकनीकी बदलाव सिर्फ अमेरिका या यूरोप तक ही सीमित नहीं हैं, भारत भी पूरी तरह से इनकी चपेट में है, जहां सदियों पुरानी सांस्कृतिक विविधता और जीवन जीने की मजबूत व्यवस्था रही है। लेकिन आज डेटिंग एप्स ने रिश्तों की पारंपरिक दुनिया को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है। जुड़े हैं करोड़ों यंगस्टर्स: आज दुनिया भर में लगभग 37 करोड़ लोग, जिनमें सबसे बड़ी तादाद युवाओं की है, विभिन्न तरह के डेटिंग एप्स से जुड़े हुए हैं। डेटिंग एप्स का किस कदर चलन बढ़ा है, इसका अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि आज अमेरिका में 30 फीसदी वयस्क लोग किसी न किसी डेटिंग एप का हिस्सा हैं। इन एप्स की शुरुआत तो दो अजनबियों के बीच प्रेम संबंध विकसित कराने के लिए एक मध्यस्थ के रूप में हुई थी, लेकिन आज तरह-तरह के डेटिंग एप्स दोस्ती, कैजुअल मीटिंग, विवाह के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं।

हाल के वर्षों में अंजान लोगों से मिलने, दोस्ती या लव रिलेशन बनाने में डेटिंग एप्स का यंगस्टर्स खूब यूज कर रहे हैं। इनकी पॉपुलैरिटी बढ़ने की वजह, इनके पॉजिटिव-नेगेटिव आस्पेक्ट्स के बारे में जानिए।

डेटिंग एप्स मिलने-मिलाने के नए ठिकाने

सबसे पॉपुलर डेटिंग एप्स: दुनियाभर में जिस डेटिंग एप की धूम है, उसका नाम टिंडर है। सो से ज्यादा देशों में सक्रिय इस एप के अप्रैल 2025 तक साढ़े सात करोड़ रजिस्टर्ड उपयोगकर्ता थे। दूसरे नंबर पर बंबल है, जो विशेष तौर पर महिलाओं को ध्यान में रखकर डेवलप किया गया है, क्योंकि इस एप में महिलाओं को रिश्ता आगे बढ़ाने के लिए पहला कदम रखने की आजादी है। यह एप किसी पुरुष को किसी महिला से संबंध जोड़ने के लिए निर्णय लेने की आजादी नहीं देता। इस एप में सिर्फ महिलाएं ही किसी के साथ को स्वीकार कर सकती हैं या उसे अस्वीकार कर सकती



हैं। एक तीसरा पॉपुलर एप हिज है, जो टेकलाइन के साथ गंभीर रिश्ते विकसित करने के लिए डिजाइन किया गया है। इसके अलावा और लाखों सभ्यक्राइबर की क्षमता रखने वाले एप्स हैं, उनमें- ओके कुपिड, ग्रिंडर और प्लैटो ऑफ फिंश डेटिंग एप्स हैं। ये सारे रिश्ते बनाने वाले एप्स अलग-अलग उम्र समूह को ध्यान में रख कर डिजाइन किए गए हैं।

इसलिए बढ़ रही पॉपुलैरिटी: डेटिंग एप्स की लोकप्रियता इसलिए बढ़ रही है, क्योंकि इनमें सुरक्षा और गोपनीयता की पुष्टा व्यवस्था होती है। इनमें एक एल्गोरिथ्म की गुणवत्ता होती है, चाहे मैचिंग सही हो या न सही हो। लेकिन



आमतौर पर एक ही एल्गोरिथ्म के लोग इनके जरिए आपस में मिलते हैं। इनकी लोकप्रियता का एक और बड़ा कारण यह है कि इन्हें रीजनल या स्थानीय भाषाओं का सपोर्ट सिस्टम भी हासिल है और सबसे बड़ी बात, इनमें एक खास किस्म का यूजर इंटरफेस होता है, जो इसको वास्तविक माहौल का आभास देता है। **पड़ रहा है रिश्तों पर असर:** इन मॉडर्न एप्स का हमारे जीवन और रिश्तों की संवेदनशीलता पर भी असर पड़ा है। निश्चित रूप से इनके चलते अब दो युवा लोगों को आपस में मिलना आसान और सुरक्षित हो गया है। पहले कुछ गिने-चुने सौभाग्यशाली लोग ही होते थे, जिनके जीवन में प्यार, मोहब्बत की जगह होती थी। लेकिन इन डेटिंग एप्स के चलते अब कोई भी अपने अनुकूल दोस्ती के लिए साथी की तलाश कर सकता है। **नेगेटिव पहलू भी हैं मौजूद:** हालांकि इन एप्स में सब कुछ अच्छा अच्छा ही नहीं है। इनके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। मसलन एप्स की दोस्ती या प्रेम में कमिटमेंट जैसी कोई चीज नहीं होती। बड़ी तादाद में लोग अपनी झूठी और नकली प्रोफाइल बनाकर एक-दूसरे से संपर्क साधते हैं और इस तरह कई तरह के अपराधों को अंजाम देते हैं। *

छोटी कहानी
गोविंद मारदाज

बस्सों बाद गांव जाने का मौका मिला। तांगा स्टैंड अब टैपो स्टैंड में बदल चुका था। टैपो से उतरते ही अपने नाम की आवाज कानों में पड़ी, 'गोपाल...!' मैंने पलट कर देखा। सामने एक चाय की गुमटी थी, जो धूप में बिल्कुल काली दिखाई दे रही थी। मैंने टैपो वाले को बीस का नोट दिया और उस दुकान की तरफ बढ़ गया। 'आ...! आ...! बहुत दिनों बाद गांव की याद आया तुझे।' उसने मुझे दुकान के अंदर बुलाते हुए कहा। मैंने उससे हाथ मिलाने के लिए अपना दायां हाथ आगे बढ़ाया। उसने हाथ तो अपना बढ़ाया, लेकिन दायां नहीं बायां। मेरी नजर उसके दाएं कंधे की ओर गई। मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई। 'यह क्या हुआ रामू?' मेरे मुंह से निकला। 'भाई गोपाल, मुझे माफ कर दे...' रामू की आंखें नम हो आईं। 'किस बात की माफी भाई...?' मैंने उसके बाएं हाथ को पकड़ते हुए पूछा। 'दोस्त, तू मुझे जो भर कर लूँगा (हाथ से दिव्यांग) कह सकता है...।' वह रुआंसा हो गया। मैं समझ गया था, वह क्या कहना चाह रहा है? मैं अतीत में चला गया। बात उन दिनों की है, जब मैं गांव में रहा करता था। मेरी मित्र मंडली में यूं तो बहुत से दोस्त थे। सबके सब मुझे घायर से गोपाल कह कर बुलाते थे, लेकिन रामू एक ऐसा दोस्त था, जो मुझे लंगड़ा (पैर से दिव्यांग) कह कर बुलाता था। दरअसल, मैं

कई वर्ष बाद गोपाल अपने गांव लौटा था। वहां उसकी मुलाकात अपने बचपन के दोस्त रामू से हुई। उसका कटा हाथ देखकर गोपाल को बहुत दुख हुआ। लेकिन रामू को अपने दुख से ज्यादा आत्मग्लानि महसूस हुई।



दिव्यांग

के लिए डांटते, लेकिन वह अपनी आदत से बाज नहीं आता। एक दिन तो तब हद हो गई, जब उसने प्रिंसिपल साहब के सामने ही मुझे लंगड़ा कह दिया। उन्हें उसकी यह बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने उसे पीटा भी। प्रिंसिपल साहब की पिटाई से तो वह और ज्यादा खफा हो गया। अब वह मुझे जब देखे तब लंगड़ा-लंगड़ा कहकर चिढ़ाने लगा। मेरी भी आदत सी हो गई थी, लंगड़ा सुनने की मैं कभी नहीं चिढ़ता था। लेकिन दूसरों को उसका लंगड़ा कहकर बुलाना अच्छा नहीं लगता था। दसवीं पास करने के बाद मैं आगे की पढ़ाई के लिए शहर चला आया। एमए अंतिम वर्ष के इम्तिहान खत्म हो चुके थे। इसलिए मैंने सोचा क्यों न गांव जाकर पुराने मित्रों से मिला जाए। 'क्या हुआ कहाँ खो गया गोपाल...?' रामू ने मेरे हाथ को झटका देते हुए पूछा। 'कुछ नहीं यार, मैं अपने बचपन में खो गया था। खैर बता तेरे दाएं हाथ को क्या हुआ?' मैंने पास में पड़े स्टूल पर

बैठते हुए पूछा। 'मत पूछ... जैसी करनी वैसी भरनी...।' मैंने तुझे कभी तेरे नाम से नहीं बुलाया... तुझे लंगड़ा ही कहा। अब तू मुझे लूँगा कह सकता है।' उसने भराई आवाज में कहा। 'छोड़ यार पुरानी बातों को... तू मेरे लिए रामू है... और रामू ही रहेगा... पर तुमने बताया नहीं यह सब कैसे हुआ?' मैंने पूछा। रामू चाय का कप मेरे हाथ में थमाते हुए बोला, 'दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद मैं अपने पिताजी के साथ खेती करने लगा। दो साल पहले गेहूँ निकालने के लिए खेत में थ्रेसर (अनाज निकालने की मशीन) लगा हुआ था। देर रात तक थ्रेसर पर खड़े रहने की वजह से नींद की झपकी आ गई। मेरा दायां हाथ मशीन में आ गया। जब मुझे होश आया तब मैं अस्पताल में भर्ती था। मेरा दायां हाथ कट चुका था।' 'फिर यह दुकान?' मैंने पूछा। 'दुर्घटना के लगभग एक साल बाद पिताजी ने मेरी छोटी-सी दुकान खुलवा दी। बस यहीं से थोड़ा बहुत कमाकर अपना गुजारा कर लेता हूँ... तू बता क्या कर रहा है आजकल?' उसने अपनी बात खत्म करते ही पूछा। मैंने बताया, 'एमए का इम्तिहान दिया है। आगे प्रशासनिक सेवा की तैयारी करने की सोच रहा हूँ। मेरा लक्ष्य यही है आईएएस बनना।' मैं उठ कर चलने लगा तो रामू मेरे लगे लग गया, बोला, 'गोपाल, अपने दोस्त को माफ तो कर दिया ना...।' मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'रामू मैं तेरे लिए तो अभी भी लंगड़ा ही हूँ... तेरे मुंह से गोपाल अच्छा नहीं लगता।' *

प्रेमचंद की धरोहर कहानियां

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण
आगामी 31 जुलाई को कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 145वीं जयंती मनाई जाएगी। उनके जाने के लगभग नौ दशक गुजर जाने के बाद आज भी उनका कथा साहित्य अगर प्रासंगिक बना हुआ है तो ऐसा उनकी गहन दृष्टि और सामाजिक-राष्ट्रीय सरोकार से प्रतिबद्धता के कारण ही संभव हुआ है। हाल में प्रकाशित होकर आई ख्यात आलोचक-संपादक पल्लव के संपादन में दो पुस्तकें 'प्रेमचंद की दलित कथाएं' और 'प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं' इस बात को और प्रमाणित करती हैं। 'प्रेमचंद की दलित कथाएं' पुस्तक में संकलित 15 कहानियां आजादी से पहले के भारतीय समाज में धंसी हुई जातिगत मानसिकता को न केवल उजागर करती हैं, बल्कि उस दौर की सामाजिक कुरूपता को भी कठघरे में खड़ा करती हैं। 'सद्व्रति, ठाकुर का कुआं, कफन, जुरमाना, मंदिर' और 'दूध का दाम' जैसी आदि कहानियां इस बात को प्रमाणित करती हैं कि पराधीन भारत के आमजन में आजाद होने की कैसी उल्टा थी। महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसक आंदोलन के प्रति प्रेमचंद के मन में कितनी निष्ठा थी, इस बात को भी ये कहानियां प्रमाणित करती हैं। ये दोनों पुस्तकें शोधार्थियों के लिए तो उपयोगी होंगी ही, प्रेमचंद के वैचारिक वैशिष्ट्य और सरोकारों को भी समझने में सहायक सिद्ध होंगी। *

पुस्तकें: प्रेमचंद की दलित कथाएं और प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं, संपादक: पल्लव, मूल्य: 250 रुपये (प्रत्येक), प्रकाशक: राजपाल इंड संस, दिल्ली



अमेरिकन रेन डास



बन बंग फाई, थाईलैंड



वर्षा के लिए प्रार्थना करते तिब्बती बौद्ध भिक्षु



वोडू वर्षा नृत्य, हैती

बहुत अजब-अनोखी हैं दुनिया में बारिश के आह्वान की रस्में

ट्रेंडिंग

शिखर चंद्र जैन

एक तरफ जहाँ अतिवृष्टि वाले क्षेत्रों में लोग भगवान से बारिश रोकने की प्रार्थना करते हैं, वहीं बारिश की कमी वाले दुनिया के कई देशों में लोग बारिश के लिए बालूनों, देवताओं और ईश्वरीय शक्तियों का आह्वान करते हैं। इसके लिए तरह-तरह की धार्मिक रीतियों का पालन करते हैं। अमेरिकी जनजातियों का वर्षा नृत्य: अमेरिका के मैदानी हिस्सों में रहने वाली कई जनजातियों के लोग वर्षा नृत्य करते हैं। यह वर्षा के आह्वान का प्राचीन अनुष्ठान है। इस अनुष्ठान में पारंपरिक पोशाक और पंखों वाले मुकुट या टोपी पहन कर, हाथों में चाल के पंख लिए, घंटों तक एक घेरे में गाना, ढोल बजाना और नृत्य करना शामिल है। ऐसा माना जाता है कि वर्षा नृत्य से वर्षा के देवता खुश होकर वर्षा करते हैं।

बन बंग फाई (रॉकेट महोत्सव): थाईलैंड के इसान रीजन और उत्तर-पूर्वी थाईलैंड के कुछ इलाकों में हर वर्ष जून महीने में यह अनोखा रॉकेट छोड़ने का महोत्सव मनाया जाता है। इस त्योहार के दौरान ग्रामीण लोग और भिक्षु, बांस या लोहे के पाइप से रॉकेट बनाकर लिए एकत्रित होते हैं। इस उत्सव में मंदिरों का आस-पास के अन्य इलाकों के चारों ओर रॉकेट जलाने का आह्वान किया जाता है, जिसके बाद आकाश में रॉकेट छोड़ते हैं। यह क्रिया 'क्रोया थाएन' नामक देवता को अर्पित की जाती है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे मंदिर के अनुसार बारिश का होना सुनिश्चित करते हैं। आदिवासी क्षेत्रों का मंडक नृत्य: आस्ट्रेलिया देश के आदिवासी क्षेत्रों में मंडक नृत्य करते हैं। यह नृत्य वर्षा के आह्वान के लिए किया जाता है। इस नृत्य में मंडकों की गतिविधियों को नकल करना,

मंडक जैसी आवाजें निकालना, शरीर पर रंग-रंगीन चूल्हे पहनना, भाले और बमरों के साथ नृत्य करना शामिल होता है। नांग मेव समारोह: थाईलैंड में ही बन बंग फाई के अलावा, थाई किसानों द्वारा देश के मध्य और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में वर्षा के आह्वान के लिए नांग मेव समारोह भी मनाया जाता है। इस समारोह में नांग मेव (बिल्ली) की पूजा की जाती है। नांग मेव समारोह, थाईलैंड में ही बन बंग फाई के अलावा, थाई किसानों द्वारा देश के मध्य और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में वर्षा के आह्वान के लिए नांग मेव समारोह भी मनाया जाता है। इस समारोह में नांग मेव (बिल्ली) की पूजा की जाती है। नांग मेव समारोह, थाईलैंड में ही बन बंग फाई के अलावा, थाई किसानों द्वारा देश के मध्य और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में वर्षा के आह्वान के लिए नांग मेव समारोह भी मनाया जाता है। इस समारोह में नांग मेव (बिल्ली) की पूजा की जाती है।

वरुण यज्ञ अनुष्ठान: वरुण यज्ञ अनुष्ठान, वैदिक हिंदू वर्षा आह्वान अनुष्ठान है। यह आज भी भारत के कई हिस्सों में किया जाता है। यह अनुष्ठान सनातन धर्म में जल के देवता वरुण को समर्पित है। इसमें मंत्रोच्चार, अग्नि में आहुति देना और वर्षा हेतु प्रार्थनाएं शामिल होती हैं। यह अनुष्ठान आमतौर पर मानसून के मौसम में जून-जुलाई में किया जाता है, जहां बरसात की कमी होती है। अभिषेक अनुष्ठान: दक्षिण भारत के किसान विशेष रूप से यह वर्षा-आह्वान अनुष्ठान अपनी उपज बढ़ाने के लिए, वर्षा की प्रार्थना हेतु करते हैं।

भारत में वर्षा संबंधी विभिन्न समारोह



में मान्यता है कि बारिश न होने पर अजर सामूहिक तौर पर मंडक-मंडकी का विवाह करवा दिया जाए तो बारिश होती है।

हैं। यह अनुष्ठान हिंदू धर्म में वर्षा के देवता, भगवान इंद्र को समर्पित है। इसमें उनकी मूर्ति पर जल और दूध चढ़ाया जाता है। इसका उद्देश्य वर्षा के देवताओं को प्रसन्न करना और वर्षा लाना है। यह आमतौर पर गर्मी के महीनों में किया जाता है, जब वर्षा कम होती है। मंडकों का विवाह: देश के कई हिस्सों विशेष रूप से उत्तर, मध्य-पश्चिमी राज्यों राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़ आदि के ग्रामीण और कई आदिवासी इलाकों में मंडक नृत्य करते हैं।

भारत की प्राचीनतम नदियों में से एक गंगा को भारतीय संस्कृति में पूज्य एवं जीवनदायिनी माना जाता है। इसका केवल धार्मिक ही नहीं, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व भी बहुत अधिक है। भारतभूमि की जीवनधारा गंगा के प्रवाह और महत्ता पर एक दृष्टि।

सभ्यता-संस्कृति की वाहक पुण्यसलिला-जीवनदायिनी गंगा



नदी गाथा वीणा गौतम

नदियों के किनारे ही संसार की सभी सभ्यताएं, संस्कृतियां विकसित हुई हैं, फली-फूली हैं। धरती पर नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आबादी और नदियों के प्रति लोगों की उदासीनता के कारण धरती पर जल संकट तो गहराया ही है, अब तो नदियों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। नदियों का न केवल संरक्षण जरूरी है बल्कि हमें अपनी नई पीढ़ी को इनके प्रति संवेदनशील भी बनाना जरूरी है ताकि इनका अस्तित्व बचा रहे और धरती में इसानी सभ्यता और संस्कृति भी हमेशा की तरह फूलती-फलती रहे।

भारतीय सभ्यता-संस्कृति की पहचान: गंगा भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी ही नहीं है। यह भारतीयता की पहचान और देश की जीवनरेखा भी मानी जाती है। भारतीय जनमानस में इस नदी के प्रति असीम श्रद्धा है। यह न केवल हमें जल प्रदान करती है बल्कि आस्था, सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव की भी वाहक है। देश की सबसे महत्वपूर्ण और पूजनीय नदी गंगा को भारत की भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवनरेखा माना जाता है। इसलिए कहा जाता है कि गंगा में सिर्फ पानी नहीं, एक सभ्यता प्रवाहमान है। गंगा नदी का प्रवाह तंत्र: गंगा नदी की उत्पत्ति हिमालय के गोमुख हिम नदी से होती है, जहां इसे भागीरथी कहा जाता है। प्रवाह के क्रम में अलकनंदा, जब इस भागीरथी में आ मिलती है,

तो उसके बाद से इन दोनों नदियों का संगम गंगा कहलाने लगता है। गंगा भारत की सबसे लंबी नदी है। इसकी लंबाई 2525 किलोमीटर है। गंगा के बेसिन में भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 26 प्रतिशत से ज्यादा भाग आता है। गंगा जिन अपनी सहायक नदियों के चलते देश की सबसे महान नदी बनती है, उन सहायक नदियों में यमुना, घाघरा, गंडक, कोसी और सोन नदी प्रमुख हैं। गंगा उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और

पश्चिम बंगाल से होकर बहती है तथा अंत में बांग्लादेश में प्रवेश कर पद्मा के रूप में बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है। बसे हैं कई तीर्थस्थल: गंगा नदी देश के अनेक तीर्थस्थल हैं, जो धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय सभ्यता के आधार हैं। एक जीवंत भौगोलिक संसाधन: भौगोलिक दृष्टि से गंगा बहुत ही महत्वपूर्ण नदी है। गंगा घाटी

का क्षेत्र भारत की सबसे उपजाऊ कृषि भूमि के अंतर्गत आता है। इस क्षेत्र में गंगा के जल से सिंचाई, जल परिवहन और पेय जल की लगभग समूची व्यवस्था बनती है, जो इसे एक जीवंत भौगोलिक संसाधन के रूप में बदलती है। गंगा घाटी क्षेत्र में बसने वालों के लिए गंगा सिर्फ एक नदी नहीं बल्कि जीवनधारा है। धार्मिक-सांस्कृतिक महत्व: हिंदू धर्म में गंगा को केवल नदी या जलधारा नहीं माना जाता, बल्कि इसे माता, देवी और मोक्षदायिनी का दर्जा प्राप्त है। गंगा के जल को अमृत के तुल्य माना जाता है। इसलिए भारत के हर धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान में गंगा जल का इस्तेमाल होता है। यही नहीं, मोक्ष की कामना रखने वाले हर धार्मिक हिंदू की यह खाहिश होती है कि उसकी मृत्यु के पश्चात उसके मुंह में गंगा जल की कुछ बूंद डाली जाए और उसकी चिता की राख को गंगा नदी में प्रवाहित किया जाए। आरंभ से लेकर आज तक गंगा भारतीय मानस में आस्था एवं श्रद्धा के रूप में प्रवाहित हो रही है। गंगा का उल्लेख वैदिक ग्रंथों से लेकर भारतीय साहित्य, कला, संगीत और लोककथाओं में व्यापक रूप से मिलता है। गंगा का उल्लेख हमारे राष्ट्रगान में भी मिलता है। गंगा का आर्थिक महत्व: भारत का लगभग 40 फीसदी हिस्सा गंगा के बेसिन क्षेत्र में बसता है और यह क्षेत्र देश के कृषि, उद्योग और व्यापार की दृष्टि से सबसे समृद्ध है। गंगा का जल उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल तथा झारखंड के एक बड़े हिस्से में सिंचाई का सबसे बड़ा स्रोत है। गंगा, यमुना के दोआब की भूमि गेहूं, गन्ना और दलहन की खेती के लिए मशहूर है। हरित क्रांति की सबसे बड़ी प्रयोग भूमि यही गंगा का मैदान था। गंगा के किनारे कोलकाता, कानपुर, भागलपुर, वाराणसी और पटना जैसे देश के कई औद्योगिक नगर बसे हैं। चमड़ा, वस्त्र, खाद्य प्रसंस्करण, बिजली संयंत्र, कागज उद्योग जैसे कई औद्योगिक संयंत्र स्थापित हैं। हाल के दशकों में राष्ट्रीय जलमार्ग-1 परियोजना के तहत हल्दिया से वाराणसी तक जल परिवहन को प्रोत्साहित किया गया है, जिससे गंगा सस्ते और एक पर्यावरण अनुकूल जल परिवहन की भी आधार बन गई है। चुनौतियां हैं कई: गंगा के समझ आज आवश्यक है। दरअसल, गंगा के जल पर दुनिया में सबसे ज्यादा जनसांख्यिकी दबाव है। जितने लोग गंगा नदी पर आश्रित हैं, उतने लोग दुनिया में किसी और नदी पर अपने जीवनयापन और सभी तरह की पहचान के लिए आश्रित नहीं हैं। इसलिए गंगा पर अतिरिक्त जन दबाव, औद्योगिक प्रदूषण, अपशिष्ट जल के साथ-साथ धार्मिक कर्मकांडों एवं प्रदूषण की भी भार है। गंगा नदी के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। नमामि गंगे मिशन जैसी योजना चलाई जा रही है। अनेक जलशुद्धि संयंत्रों की स्थापना की गई है। *

सिने ट्रेड हेमंत पाल

हिंदी सिनेमा की शुरुआत से लेकर आज तक कई सितारों ने अपनी काबिलियत के दम पर फिल्म इंडस्ट्री में अपने पैर जमाए। कई बार तो नायक-नायिकाओं के पैरों के फिल्मांकन ने फिल्म इंडस्ट्री में उनके पैर जमाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। फिल्म में हीरो से पहले उसके पैरों की एंट्री: फिल्म 'फूल और पत्थर' में नायक धर्मेन्द्र की एंट्री छोटे-छोटे पैरों से सड़क पर चढ़ते हुए और बड़े पैरों से सड़क से उतरते हुए थी, जिसे बहुत पसंद किया गया। इसके बाद तो कई फिल्मों में पैरों का शॉट दिखाकर नायक को बच्चे से बड़ा दिखाने के प्रयोग किए गए। पैरों ने क्रिएटिविटी का सर्वेक्षण: देव आनंद की 'ज्वेल थोफ' में भी पांव को लेकर सर्वेक्षण दिखाया गया। नायिका कहती है कि नायक के पैरों में छह अंगुलियां हैं, वह पैर दिखाए। लेकिन वह आलमटोल करता है, जिससे सर्वेक्षण बढ़ता जाता है। बाद में नायक जिस अंदाज में मोजे उतारता है, वह दृश्य देखने लायक होता है। फिल्म 'शोले' में हाथ कटे ठाकुर (संजीव कुमार) की असमर्थता तब शौर्य में बदल जाती है, जब फिल्म के क्लाइमेक्स में वह अपने पैरों में पहने कील लगे जूतों से गम्बर सिंह (अमजद खान) को मारता है। ठाकुर के पैर की हर टोकर पर सिनेमा हॉल तालियों और सीटियों से गूंज उठता। 'शोले' में ही गम्बर सिंह को भी चट्टान पर बेटे लेकर घूमते दिखाया गया, तब कैमरा उसके पैरों पर ही फोकस होता है। शमी कपूर की फिल्म 'चायना टाउन' में नायक के हमशकल के पैरों का आकार छोटा होने से कहानी में मोड़ आता है, तो सलीम जावेद ने 'यादों की बारात' में एक नया प्रयोग किया। इसमें खलनायक अजीत के दोनों पैरों के आकार में

हिंदी फिल्मों नायक, नायिका और खलनायकों के बॉलीवुड में अपने पैर जमाने में मदद करती रही हैं, एक बड़ी पहचान दी है। इसके साथ इनके पैरों का फिल्मांकन में बहुत ही करिश्माई अंदाज में फिल्मांकन हुआ, जिसने सपेस, रोमांच, एक्शन, रोमांस क्रिएट करके फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाने में इंपॉर्टेंट रोल अदा किया है। ऐसी ही कुछ फिल्मों पर एक नजर।

पर्दे पर पैरों का करिश्मा



'शोले' में अमजद खान के साथ संजीव कुमार



'उपकार' में मलंग के किरदार में प्राण

अंतर होता है। वह एक पैर में 9 नंबर और दूसरे पैर में 10 नंबर का जूता पहनता है। फिल्म 'शोले' में क्लाइमेक्स में जब टैबल पर अजीत के दोनों जूते दिखाए जाते हैं, तो फिल्म के नायक धर्मेन्द्र उसे चलेगा। फिल्म 'पैरों का करिश्मा' में मलंग के किरदार में प्राण 'शोले' का वो डायलॉग जिसमें गम्बर सिंह बसंतों से कहता है 'जब तक तेरे पैर चलेंगे, उसकी सांस चलेगी। जब तेरे पैर रुके, तो ये बंदूक चलेगी।' फिल्म 'मिस मेरी' में बचपन में बिछड़ी नायिका के पैरों की छह अंगुलियां, उसे अपने परिवार से मिलती है तो 'नाचे मयूरी' में सुधा चंद्रन के नकली पैरों से नर्तकी



पहचान लेते हैं। इसके साथ ही फिल्म का रोमांच चरम सीमा पर पहुंच जाता है। नायिकाओं के हसीन पैर: हिंदी फिल्मों में नायिका के हसीन पैरों पर भी कई आइकॉनिक दृश्य और गीत फिल्माए गए। फिल्म 'पाकीजा' में मीना कुमारी के पैरों की खूबसूरती ने खूब करिश्मा किया। बिना चेहरा देखे, रेल की सीट पर मीना कुमारी के पैर देखकर राजकुमार एक चिट्ठी छोड़ जाते हैं, जिस पर लिखा होता

है 'आपके पांव देखे, बहुत हसीन हैं, इन्हें जमीन पर मत उतारिएगा, मैंले हो जाऊंगी।' याद कीजिए फिल्म 'शोले' का वो डायलॉग जिसमें गम्बर सिंह बसंतों से कहता है 'जब तक तेरे पैर चलेंगे, उसकी सांस चलेगी।' जब तेरे पैर रुके, तो ये बंदूक चलेगी।' फिल्म 'मिस मेरी' में बचपन में बिछड़ी नायिका के पैरों की छह अंगुलियां, उसे अपने परिवार से मिलती है तो 'नाचे मयूरी' में सुधा चंद्रन के नकली पैरों से नर्तकी पहचान लेते हैं। इसके साथ ही फिल्म का रोमांच चरम सीमा पर पहुंच जाता है। नायिकाओं के हसीन पैर: हिंदी फिल्मों में नायिका के हसीन पैरों पर भी कई आइकॉनिक दृश्य और गीत फिल्माए गए। फिल्म 'पाकीजा' में मीना कुमारी के पैरों की खूबसूरती ने खूब करिश्मा किया। बिना चेहरा देखे, रेल की सीट पर मीना कुमारी के पैर देखकर राजकुमार एक चिट्ठी छोड़ जाते हैं, जिस पर लिखा होता



बनने की कहानी कही गई। जब नायिकाओं के पैरों की बात आती है, तो जाहिर है वह सुंदर तो होंगे ही। 'मेरे पांव में मेहंदी लगी है', 'आजकल पांव जमीं पर नहीं पड़ते

फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर लंबी दौड़ लगाते हुए उस समय की कई फिल्मों को पीछे छोड़ दिया था। फिल्मों में गरीबी और मजबूरी दिखाने के लिए भी निर्माताओं ने कभी नायक को कभी नायिका को तो कभी सहनायिका या सहनायक को पैरों से दिव्यांग बनाने का फार्मूला आजमाया। 'उपकार' का मलंग, 'हीर रांशा' का एक पैर से अशक्त मामा, 'सच्चा झूठा' और 'मजबूर' की पैरों से दिव्यांग बहन ने दर्शकों को भावुक कर दिया। इसी तरह फिल्म 'शान' में चलने में अक्षम अन्दुल (मजर खान) का मुखबिर का किरदार भी काफी लोकप्रिय हुआ था। *

राजकुमार के पैर और सफेद जूते

याद कीजिए फिल्मों के वे सीन, जिनमें पर्दे पर हीरो से पहले उसके सफेद जूते दिखाए जाते थे और दर्शक जान जाते थे कि अब सीन में किसकी एंट्री होने वाली है। 'हमराज' और 'वक्त' में राजकुमार की जानदार एंट्री तो आपको याद ही होगी। इन फिल्मों में जैसे ही पर्दे पर राजकुमार के सफेद जूते दिखाई देते, दर्शक तालियों से उनका स्वागत करते। राजकुमार खुद इस तथ्य से वाकिफ थे, वे अक्सर बी.आर. चोपड़ा से मेजाक में कहा करते थे, 'जानी, सुना है आजकल आप हमारे जूतों की कमाई खा रहे हैं।'